भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे

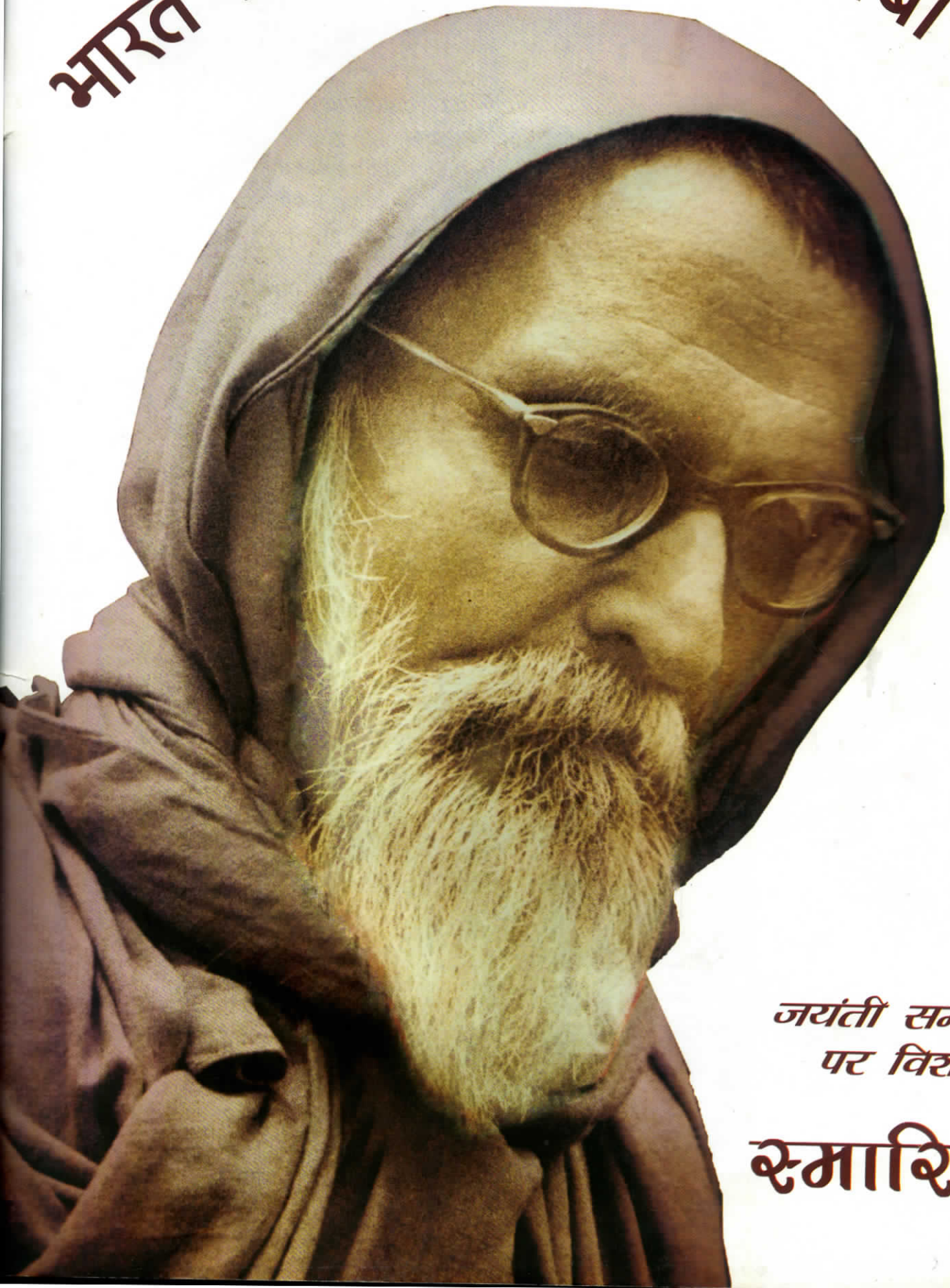

जयंती समारोह
पर विशेष

स्मारिका

KVS Angency

Publishers & Suppliers of Text / Note Books & All School Related Items

We have tie ups with all the Major Publishers and as such are fully equipped to supply the course material of any syllabus (CBSE, ICSE & STATE). Our commitment to excellence prompts us to never compromise either with the quality of the product or with the need to deliver on time, al the time.

Excellence is not the benchmark we strive for, at KVS AGENCY, excellence is the way of life and is lmbibed in everything we do. In today's era of globalisation, education has become an indispensable part of our life and books without doubt are an integral part of Education. Therefore we put enormous impetus on the overall quality of the books and the matter contained in the books.

Few of our finest publications

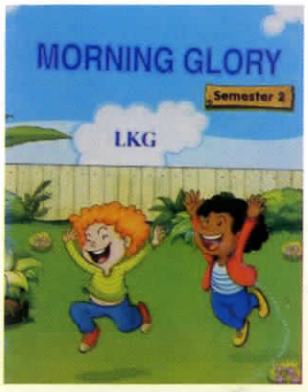

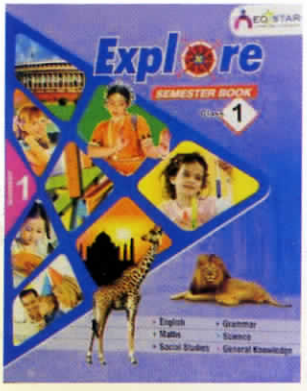

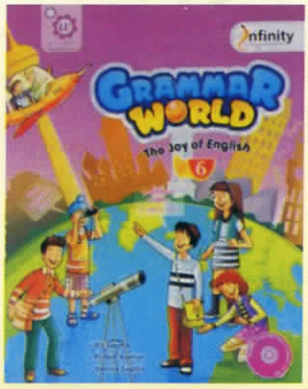

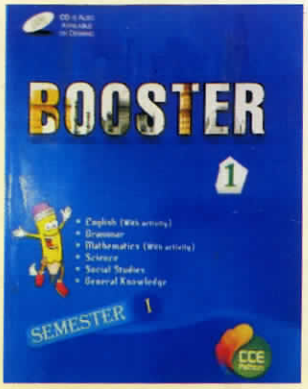

Our books come with CDs, Text Generators & Web support

For any queries please feel free to contact us at :
9945048164, 9448674812, 9845665344, 9902505053
kvsagency14@gmail.com

118, 5th A Cross, 4th Main, Vidyagiri Layout, Nagarabhavi, **Bangalore**-560 072.
Branches : **Hospet, Davanagere, Belagavi, Mysore & Udupi**

के. के. शारदा

अध्यक्ष की कलम से

भारत रत्न आचार्य विनोबा भावे, एक ऐसे महान् पुरूष जो आज भी सितारा बनकर इतिहास के पन्नों पर चमक रहे हैं। विनोबा भावे जी ने जन–कल्याण के लिये पूरा जीवन दूसरों के नाम कर दिया। भू–दान आंदोलन चलाकर उन्होंने असंख्य जरूरतमंदों का उत्थान किया। 'जय जगत' का नारा देकर उन्होंने सभी संकीर्णताओं को छोड़कर विश्व को अपना समझने का संदेश दिया। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये संत विनोबा भावे जी ने 8 मार्च 1968 को आचार्यकुल की स्थापना की एवं इसके लिये कुछ उद्देश्य निर्धारित किये। उन्हीं उद्देश्यों पर चलते हुए सन् 1997 में आचार्यकुल चंडीगढ़ की स्थापना की गई। तब से ही आचार्यकुल चंडीगढ़ विनोबा भावे के बताए मार्ग पर अग्रसर होते हुए समय–समय पर विभिन्न गतिविधियां कर रहा है।

प्रत्येक वर्ष विनोबा जयंती, गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती, गांधी जी एवं कस्तूरबा गांधी जी की पुण्यतिथि, डा. गोपीचंद भार्गव (प्रथम मुख्यमंत्री पंजाब) की पुण्यतिथि, शहीदी दिवस, अहिंसा दिवस आदि मनाये जाते हैं। साहित्यिक गतिविधियों में पुस्तक विमोचन एवं काव्य गोष्ठियां की जाती हैं। जरूरतमंद व होनहार बच्चों की सहायता, पौधारोपण आदि कार्य किये जाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है जिसमें शिक्षा, खेल–जगत, साहित्य, समाज–सेवा, रंगमंच, पत्रकारिता आदि को सम्मिलित किया जाता है।

इस वर्ष आचार्यकुल चंडीगढ़ विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती मनाने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में विनोबा जी पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। चंडीगढ़ में एक भव्य समारोह आयोजित किया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित देश की सेवा करने वाली शख्सियतों को सम्मानित किया जाएगा। इस सबके पीछे हमारा उद्देश्य है कि देश की भावी पीढ़ी संत विनोबा भावे जी को पहचाने और उनके बताए रास्ते पर चले। भविष्य में भी हम ऐसी गतिविधियों द्वारा अपना सफर जारी रखेंगे।

जिन सज्जनों ने विज्ञापन के रूप में सहायता की है, स्मारिका की तैयारी और समारोह को सफल बनाने में सहयोग दिया है, मैं उन सभी का आभारी हूँ।

अध्यक्ष
आचार्यकुल चंडीगढ़

मुख्य संपादक	संपादक	सह संपादक	सह संपादक	सह संपादक
प्रेम विज	प्रज्ञा शारदा	डा॰ देवराज त्यागी	डा॰ दलजीत कौर	संजय भारतीय

प्रकाशक : आचार्यकुल चण्डीगढ़, गांधी स्मारक भवन, सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़–160015, दूरभाषः 0172–2727226
मुद्रक : राहत ऑफसेट प्रिंट्रस, मोबाइल : 9814435417 | Email : arora77@hotmail.com

हरियाणा राजभवन,
चण्डीगढ़।
HARYANA RAJ BHAWAN,
CHANDIGARH.

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि आचार्यकुल, चण्डीगढ़ भारत रत्न संत विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती मना रहा है और इस उपलक्ष में स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें सर्वोदय विचारधारा के मूल्यों, आदर्शों, कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला जाएगा।

आजादी की लड़ाई के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने सच्चाई, अहिंसा और आपसी मेलजोल के उसूलों की शिक्षा दी। उन्होंने ऐसे कल्याणकारी और आदर्श देश व समाज की भी कल्पना की जहां लोगों में जाति, धर्म अथवा वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव न हो और वे खुशहाल बनें। उनके इस स्वप्न को साकार करने के लिए आचार्य विनोबा भावे ने सर्वोदय आन्दोलन के द्वारा समतामूलक समाज की स्थापना हेतु अथक प्रयास किए। उनका भूदान आन्दोलन लाखों गरीब परिवारों के लिए वरदान साबित हुआ। इसमें उन्होंने साढे 13 सालों तक पदयात्रा करते हुए 44 लाख एकड़ भूमि दान में लेकर भूमिहीनों में बांटी थी।

हर्ष का विषय है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे ने जिन आदर्शों और जीवन मूल्यों को स्थापित किया उन्हें आगे बढ़ाने में आचार्यकुल, चण्डीगढ़ निरन्तर कार्यरत है। मैं विश्वास व्यक्त करता हूं कि यह संस्था गांधीवादी विचारधारा के माध्यम से प्रकाशस्तम्भ की तरह समाज का मार्गदर्शन करती रहेगी।

मैं आचार्यकुल, चण्डीगढ़ द्वारा भारत रत्न संत विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती के उपलक्ष में प्रकाशित की जा रही स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी)

ਪਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ
ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ, ਪੰਜਾਬ

ਅੱ.ਸ.ਪੱ.ਨੰ: [illegible]
ਮਿਤੀ : 5-5-2015

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आचार्यकुल चण्डीगढ़ भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे की 120वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

आचार्य संत विनोबा भावे एक महत्वपूर्ण विभूती थे। स्वतंत्रता संग्राम, भूदान और ग्राम दान आंदोलनों के प्रणेता थे। भूदान और ग्राम दान आंदोलन के लिए उन्होंने पन्द्रह वर्षों तक पद यात्रा की। आप की दृष्टि वही थी जो गांधी जी की थी। मुझे विश्वास है कि विनोबा भावे जी के जीवन से नयी पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

मैं इस अनूठे कार्य के लिए आचार्यकुल को अपनी शुभ कामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में भी आचार्यकुल ऐसी महान् विभूतियों की विचारधारा को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभाता रहेगा।

(परकाश सिंह बादल)

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

सत्यमेव जयते

D.O. No. CMH-2015/.....

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 10.7.2015

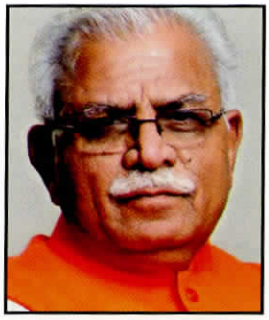

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आचार्यकुल चण्डीगढ़ द्वारा भारत रत्न संत विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती चण्डीगढ़ में मनाई जा रही है।

संत विनोबा भावे जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के परम शिष्य थे। भूदान आंदोलन में विनोबा भावे जी का अद्वितीय योगदान रहा। उन्होंने कई वर्षों तक भारत के विभिन्न राज्यों में पद यात्राएं की और लगभग 44 लाख एकड़ भूमि दान में लेकर भूमिहीनों में बांटी। मूल्य आधारित जीवन पर एक सीधा साधा सादा जीवन व्यतीत करने वाले संत विनोबा भावे देश की निःस्वार्थ सेवा करने की एक ज्वलन्त प्रतिमूर्ति थे।

संत विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती पर आचार्यकुल चण्डीगढ़ द्वारा जिस समारोह का आयोजन किया जा रहा है, उससे निःसंदेह आज की युवा पीढ़ी को भारत माता की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की प्रेरणा मिलेगी। यह हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर संत विनोबा भावे जी के जीवन, दर्शन एवं सिद्धातों पर प्रकाश डालने वाली एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं संत विनोबा भावे जी के शुभ जयंती समारोह के सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

मनोहर लाल

(मनोहर लाल)

ਗੁਲਜ਼ਾਰ ਸਿੰਘ ਰਣੀਕੇ

ਅੱ.ਸ. ਪੱਤਰ ਨੰ: 219

ਪਸ਼ੂ ਪਾਲਣ, ਮੱਛੀ ਪਾਲਣ ਤੇ ਡੇਅਰੀ ਵਿਕਾਸ
ਅਤੇ ਅਨੁਸੂਚਿਤ ਜਾਤੀਆਂ ਤੇ ਪੱਛੜੀਆਂ
ਸ਼੍ਰੇਣੀਆਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਮੰਤਰੀ, ਪੰਜਾਬ ।

ਮਿਤੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ 19-08-2015

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्यकुल चंडीगढ़ भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे की 120वीं जयंती के शुभ अवसर पर स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन में विनोबा भावे जी ने महात्मा गांधी जी का साथ दिया और भू–आंदोलन चलाकर जरूरतमंदों को भू–दान कर उनका उत्थान किया । पन्द्रह वर्षों तक पद यात्रा की। मुझे विश्वास है कि नई पीढ़ी इस स्मारिका के माध्यम से महान विभूति विनोबा जी के जीवन से प्रेरणा लेगी।

इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये मैं आचार्यकुल चंडीगढ़ को शुभ कामनाएं देते हुए भविष्य में भी ऐसे कार्यों की आशा करता हूँ।

(गुलजार सिंह राणिके)

KIRRON KHER
MEMBER OF PARLIAMENT
(LOK SABHA)

सत्यमेव जयते

किरण खेर
संसद के सदस्य
(लोकसभा)

MESSAGE

It has given me immense pleasure to note that Acharyakul Chandigarh is celebrating the 120th birth anniversary of Bharat Rattan Sant Vinoba Bhave and a souvenir is also being brought on this occasion. Acharya Vinoba Bhave is a real Hero of Bhoo Daan Andolan, who motivated landlords to donate land for landless persons. Really, he laid his life in service of unprivileged class of society.

It is appreciable that Acharyakul Chandigarh is making all out efforts to apprise new generations about the life of National Heroes. I am sure in the years to come Acharyakul Chandigarh will continue to play its rightful role for the welfare of society.

Kirron Kher

(Kirron Kher)
MP, Chandigarh.

DELHI - C-191, Defence Colony, New Delhi - 110024
CHANDIGARH - House No - 65, Sector - 8A, Chandigarh - 160018, Mobile No. : +91 9041341004, +91 08010865288, +91 09815410601
e-mail-kirronkher14@gmail.com
दिल्ली - सी - 191, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली - 110024
चंडीगढ़ - हाउस नं० - 65, सेक्टर - 8ए, चंडीगढ़ - 160018, मोबाईल नं० +91 9041341004, +91 08010865288, +91 09815410601

PAWAN KUMAR BANSAL
Former Union Minister

64, SECTOR 28A,
CHANDIGARH - 160002
PHONE: 0172-2657565
FAX: 0172-4609776
e-mail: pkbchd@gmail.com

February 16, 2015

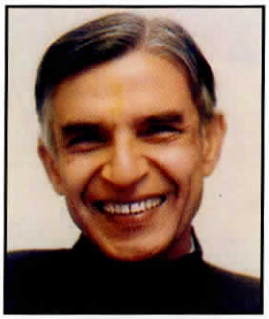

MESSAGE

Acharya Vinoba Bhave was that unique revolutionary who after having worked closely with Mahatma Gandhi strove to build an egalitarian society, inspiring big landowners across the country to donate land for the landless.

A scholar of Vedas and Upnishads, Acharya Vinoba Bhave jumped into the freedom struggle and became a close associate of Mahatma Gandhi. Later, undertaking long Padyatras across the length and breadth of the country for 13 years, he collected 44 lakh acres of land for distribution amongst the landless.

It is heartning to learn that Acharyakul Chandigarh is celebrating the 120th Jayanti of Acharya Vinoba Bhave. This is a laudable step which will help the present generation to appreciate the work and life of that divine soul. I wish the program grand success.

Pawan Kumar Bansal

(PAWAN KUMAR BANSAL)

D.O. No. 3272

Vijay Dev, IAS

Adviser to the Administrator
Union Territory of Chandigarh
U.T. Secretariat, Sector-9
Chandigarh 160017

Tel : 0172-2740154 (O) 0172-2790003 (R)
Fax : 0172-2740165 & 0172-2794005
E-mail : adviser-chd@nic.in

March 2015

MESSAGE

I am glad to know that Acharyakul Chandigarh (Regd) is celebrating 120th Jayanti of Bharat Rattan Sant Vinoba Bhave and publishing a Samarika on his teachings and principles.

I appreciate the efforts of Acharyakul Chandigarh for celebrating the Jayanti and congratulate the members for this noble cause.

(Vijay Dev)

POONAM SHARMA
MAYOR

Off. : 0172-2714916
Fax : 0172-2714916
Mob : 09915714570

MUNICIPAL CORPORATION
NEW DELUXE BUILDING, SECTOR 17, CHANDIGARH - 160 017

D.O. No. : PA/Mayor/MCC/2015/654

Dated 30.07.15

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि आचार्यकुल चण्डीगढ़ भारत रत्न संत विनोबा भावे की 120वीं जयन्ती का आयोजन कर रहा है। इस शुभ अवसर पर आचार्यकुल चण्डीगढ़ के सदस्यों तथा संत विनोबा भावे जी के जीवन, शिक्षा एवं सिद्धांतों पर स्मारिका को चिरस्मरणीय व सारगर्भित बनाने के लिए पदाधिकारियों व सहयोगियों को बधाई देती हूं जो निरन्तर प्रयास से समाज के एक हिस्से के कल्याण के लिए जुटे हुए हैं।

संत विनोबा भावे जी के सिद्धांतों से मैं बहुत प्रभावित हूं तथा उनके उपदेश स्वरूप मिले दिशा–निर्देशों को अपने जीवन में आत्मसात करने का भरसक प्रयत्न करती हूं तथा सभी से आग्रह करती हूं कि जो तुम अपने लिए चाहते हो वही दूसरों के लिए चाहो तथा जो तुम अपने लिए नहीं चाहते वह दूसरों के लिए भी न चाहो।

धन्यवाद

पूनम शर्मा

सत्यमेव जयते

Anurag Agarwal, IAS

Home Secretary,
Chandigarh Administration,
Chandigarh.

MESSAGE

I am delighted to know that Acharyakul Chandigarh (Regd) is celebrating 120th Jayanti of Sant Vinoba Bhave Ji.

The initiative being taken by the society to publish a Samarika based on his life and principles on this occasion is highly commendable. This would not only enlighten the young generation about such an inspiring personality, but would also blossom them into all-round individuals.

I feel proud in congratulating Acharyakul Chandigarh for celebrating this important day and convey my heartfelt wishes to all those associated with this noble cause.

(ANURAG AGARWAL)

रजि.नं. ई.–234 ई. वर्धा

जय जगत

आचार्यकुल

(निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्यो का राष्ट्रीय संगठन)

संत विनोबा भावे

पंजीकृत कार्यालय :– परंधाम आश्रम पवनार (वर्धा) 442111 (महाराष्ट्रा) मो. 09403827464

अध्यक्षीय कार्यालय :– "लहरी मोती स्मृति धाम" पसून्द, जिला–राजसमन्द– 313324 (राजस्थान)
मो. 09414928380 **E-mail : hirashrimali@gmail.com**

क्रमांक : **दिनांक : 23.05.2015**

संदेश

परम पूज्य संत विनोबाजी ने राष्ट्र को भूदान आन्दोलन से जोड़कर अपने अथक प्रयासों एवं परिश्रम से करीब 44 लाख एकड़ भूमि भूदान में लेकर भूमिहीनों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण जनोपयोगी कार्य किया । मैंने उनके द्वारा संस्थापित भूदानी गांव में कार्य करने एवं नजदीक से भूदानी ग्राम योजना से ग्रामवासियों द्वारा ग्राम विकास का महत्वपूर्ण दायित्व निभाते देखा एवं उनके विकास की गति में पंचायत समिति के विकास अधिकारी के नाते अपना दायित्व पूर्ण करने का प्रयास किया । पूज्य विनोबाजी ने भूदान आन्दोलन के उतरार्ध में सन 1968 को आचार्यकुल की स्थापना कर निर्भय, निर्वेर, निष्पक्ष चिन्तन कर राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के विषय में ग्राम, जिला, राज्य एवं राष्ट्र के लिए तटस्थ रहकर अपना अभिमत प्रकट करने का दायित्व सौंपा। ऐसे महान युग परिवर्तन कर्ता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रथम सत्याग्रही के रूप में उनका चयन किया, ऐसे महान् सत्याग्रही जन आन्दोलन के उन्नायक महान् पुरूष संत विनोबा की 120 वीं जयन्ती महोत्सव के अवसर पर चण्डीगढ़ आचार्यकुल नई पीढ़ी को जानकारी प्रदान करने हेतु एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है ।

मैं आपको एवं आचार्यकुल चण्डीगढ़ के प्रयास को नमन करता हुआ धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। आपका प्रयास सुफल होकर समाज को दिशा प्रदान करेगा, ऐसा विश्वास है।

विनीत

(अणुव्रती डॉ. हीरालाल श्रीमाली आचार्य)
अध्यक्ष

गांधी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली - 110002

GANDHI SMARAK NIDHI
Rajghat, New Delhi- 110002

अध्यक्ष : पी. गोपीनाथन् नायर
मंत्री : रामचन्द्र राही

पत्रांक : गां.स्मा.नि./2014–15/**521**

दिनांक : 23.03.2015

सन्देश

आचार्य विनोबा ने समाज में विचार का शासन लाने की अवधारणा प्रस्तुत की थी। विचार–शासन की बुनियाद बनाने के लिए उन्हेंने लगभग 14 साल तक देशभर में विचार–शिक्षण का महान् कार्य किया और उस काम को आगे बढ़ाने के लिए आचार्यकुल की स्थापना की। इसके उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंनं कहा था कि आचार्यकुल निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष रूप में देश–दुनियाँ के समक्ष प्रस्तुत होने वाली चुनौतियों, समस्याओं का विश्लेषण करेगा और अपनी तटस्थ राय समाज के सामने प्रस्तुत करेगा। देश–दुनिया के विचारनिष्ठ लोग इस जिम्मेदारी को उठायेंगे और इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे।

यद्यपि विचार–शासन की विनोबा की संकल्पना अभी तक एक सपना ही है क्योंकि आज तो कॉरपोरेट पूँजी यानी धनसत्ता और राज्यसत्ता एवं धर्मसत्ता ही समाज पर हॉवी है। लेकिन विनोबा की विचार–शासन की संकल्पना को हमें साकार करने की दिशा में निरंतर प्रयास करते रहना है, क्योंकि विचार की शक्ति ही हमें विनाश के गर्त में जाने से बचायेगी।

आचार्य विनोबा के सपने को साकार करने की जिम्मेदारी देश–दुनिया के हर बुद्धिनिष्ठ व्यक्ति की है। आप इस दिशा में प्रयासरत हैं, इसके लिए हमारी हार्दिक बधाई!

सादर जय जगत्,

रामचन्द्र राही

(रामचन्द्र राही)

Office: 011- 23315809 Fax: 011-23311495, Secretary Office-011-23328723, Res: 011-23318318
Email: gandhismarak@yahoo.com, gandhismaraknidhi73@gmail.com

Dr. Anmol Rattan Sidhu
M.A., LL.M., Ph.D.
Senior Advocate
Punjab & Haryana High Court

MEMBER HIGH COURT BAR CHANDIGARH

#221, Sector 21-A,
CHANDIGARH
Resi. : 0172-2710138
Fax : +91-172-2710132
Mob. : +91-99143-00002
Email : anmolrsidhu@yahoo.com

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आचार्यकुल चण्डीगढ़ भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे की 120वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

आचार्य संत विनोबा भावे एक महत्वपूर्ण विभूति थे। स्वतंत्रता संग्राम, भूदान और ग्राम दान आंदोलनों के प्रणेता थे। भूदान, ग्राम दान आंदोलन के लिए उन्होंने पन्द्रह वर्षों तक पद यात्रा की। विनोबा जी के प्रवचनों ने डाकुओं पर ऐसा प्रभाव डाला कि उन्होंने विनोबा जी के आगे आत्म समर्पण कर दिया। विनोबा जी गांधी जी के परम शिष्यों में से एक थे। मुझे विश्वास है कि विनोबा जी के जीवन से नई पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

मैं इस अनूठे कार्य के लिए आचार्यकुल चण्डीगढ़ को अपनी शुभ कामनाएं देता हूँ।

डा. अनमोल रतन सिद्धू
सीनियर एडवोकेट
पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट
फॉर्मर एसिस्टैंट सोलिसिटर जनरल ऑफ इन्डिया
चण्डीगढ़

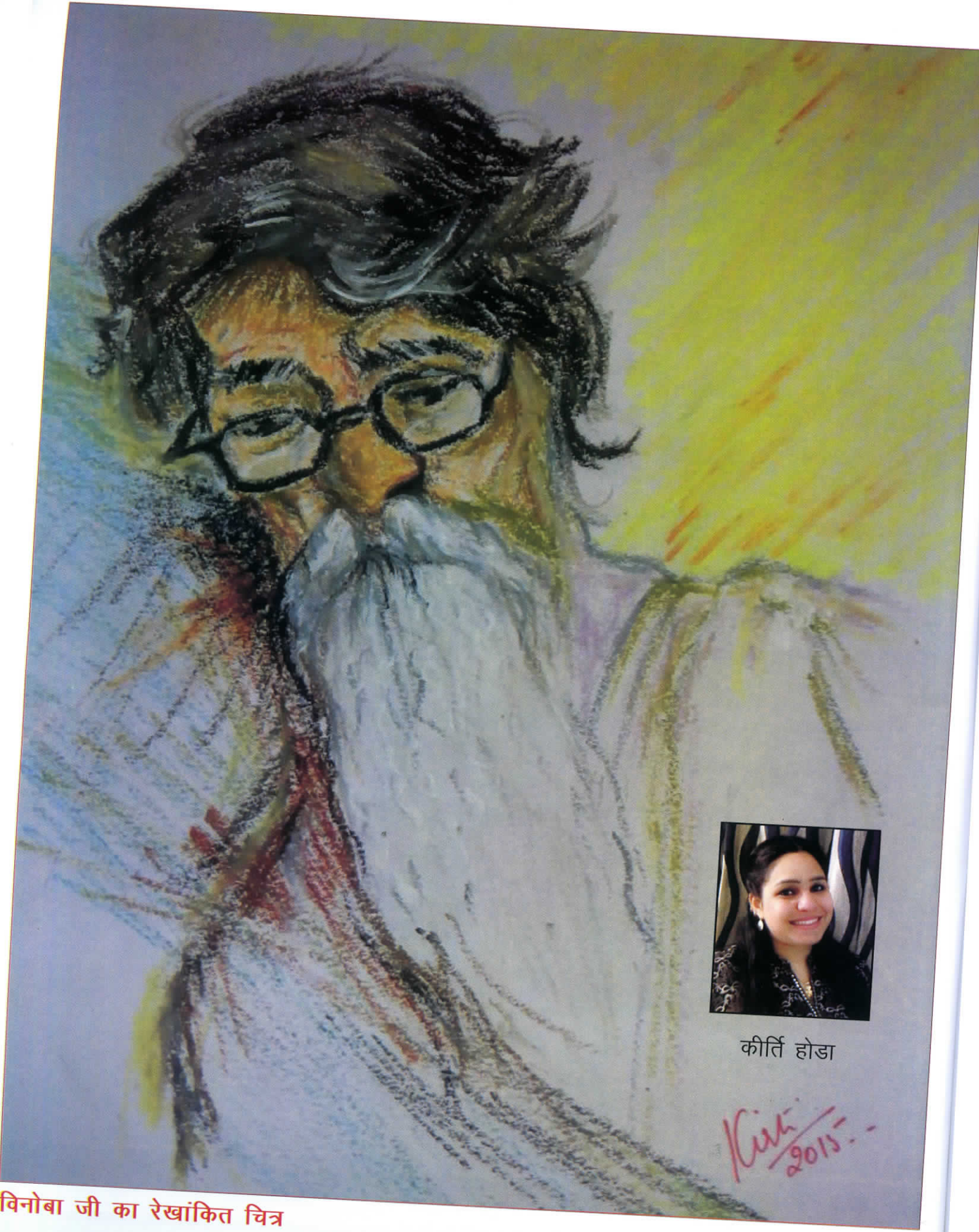

कीर्ति होडा

विनोबा जी का रेखांकित चित्र

विनायक नरहर भावे बनाम विनोबा भावे : एक परिचय

प्रज्ञा शारदा

विनोबा जी को तीन बातों की धुन थी – उद्योग की, भक्ति की और खूब सीखने की। खादी और गांव के दूसरे उद्योग धंधों को बढ़ाने और फैलाने के लिए रात–दिन बेचैन रहते। उनका मानना था कि हमारा गांव वाला देश बिना उद्योग के पनप ही नहीं सकता। देश को बढ़ाना है तो गांवों के उद्योगों को बढ़ाना होगा।

बाबा विनोबा ।

देश और दुनिया का हर आदमी इस नाम से परिचित है।

बाबा विनोबा बच्चों, जवानों व बूढ़ों अर्थात सारे देश के बाबा थे।

संत विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 में महाराष्ट्र के गागोदा गांव मे हुआ था।

विनोबा जी का पूरा नाम विनायक नरहर भावे था। गांधी जी ने उन्हें प्यार से नाम दिया विनोबा।

नरहर उनके पिता का नाम है तथा भावे उनके परिवार का नाम है। उनकी माता का नाम उनके विवाह से पहले 'वेणुताई' था। विवाहोपरांत उनका नाम रूक्मिणी ताई रखा गया।

विनोबा जी के पिता नरहर पंत को देशी–विदेशी रंगों के परीक्षण में दिलचस्पी थी। वे बहुत मेहनती, सफाई पसन्द व व्यवहार कुशल थे। मिज़ाज के कुछ कड़े भी थे।

विनोबा जी के दादा शम्भूराव वैद्य थे। उन्हें नाड़ी का बहुत अच्छा ज्ञान था। भगवान का नाम लेकर सभी को मुफ्त दवाई देते थे। कहते : औषधं जाहवीतोयं वेद्यो नारायणो हरिः।। अर्थात – गंगाजल ही दवा है और भगवान ही वैद्य। 70–75 वर्ष पहले हरिजनों को मन्दिर में आने देना और भोजन करवाना बड़ा हिम्मत का काम था। वे जाति भेद–भाव मिटाना चाहते थे। 'भगवान के तो सभी बच्चे हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान।' उनका कहना था, 'राम के मन्दिर में भेद कैसा?'

दादा का विनोबा के जीवन पर बड़ा असर था। विनोबा के पिता नरहर पंत उन्हें अंग्रेजी, फ्रांसीसी पढ़ा कर बैरिस्टर या वैज्ञानिक बनाना चाहते थे पर विनोबा को मराठी पढ़ने में अधिक आनन्द आता था।

विनोबा जी के जीवन पर उनकी माता जी के विचारों का भी बड़ा गहरा प्रभाव था। विनोबा की माता जी ईश्वर भक्त, दयालू, मेहनती व बड़ी मिठबोली थी। भजन गाने व सुनने में उनका अधिक ध्यान रहता। एक बार उनकी मॉ ने उन्हें बताया कि गृहस्थ आश्रम का ठीक से निर्वाह करने में तो एक पीढ़ी तरती है पर उत्तम ब्रहम्चर्य का पालन करने से सात पीढ़ियॉ तर जाती हैं। बस तभी से विनोबा जी को लगा कि ब्रहम्चर्य रहना ही ठीक है। बस फिर क्या था ब्रहम्चर्य के नियमों का वे दृढ़ता से पालन करने लगे।

विनोबा जी स्वभाव से शरारती और जिद्दी थे। किसी बात के लिए न कह दिया तो मतलब न। घूमने के शौकीन तथा प्रकृति से प्यार करने वाले थे। उन्हें अंग्रेजी में बात करना पसंद नहीं था। लाइब्रेरी में रोज घंटो पढ़ने के शौकीन। 1903 में पढ़ाई के लिए विनोबा अपने दादा के पास बड़ोदा आए। वे अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी, फ्रैंच, संस्कृत के ज्ञाता थे।

उन्होंने अपनी मॉ के लिए गीता का मराठी में अनुवाद किया। पर तब तक मॉ नहीं रही सो उन्होंने उस अनुवाद का नाम रखा – गीताई। गीता + आई = गीताई। (गीता माता)। गणित उनका प्रिय विषय था। कठिन से कठिन प्रश्न जो उनके गुरू जी भी हल नहीं कर पाते थे, वे कर देते थे।

विनोबा 9–10 साल के थे तभी से उनमें राष्ट्रीय भावना भरने लगी थी। बड़े होने पर वे एक ओर साधू संतो के उपदेश पढ़ते, दूसरी ओर राष्ट्रीय अखबारों में छपे लेख। 1914 में उन्होंने बड़ोदा में 'विद्यार्थी मण्डल' खोला। चन्दा इक्ट्ठा कर 1600 पुस्तकों का पुस्तकालय भी खोला। सन 1916 में पहली बार कांशी आए। इन्हीं दिनों महात्मा गांधी कांशी आए। 4 फरवरी 1916 को हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास उत्सव में पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें भाषण करने बुलाया था। बापू बोलने लगे तो लगा ज्वालामुखी फट रहा है। बापू ने अपने भाषण में राजा–महाराजाओं को फटकारा और किताबों के जरिए आज़ादी प्राप्त करने की बात कही। बापू की बातों में विनोबा को सत्य टपकता दिखा। हिंसा से दूर, भगवान पर अटल श्रद्धा, अफ्रीका में सत्याग्रह की लड़ाई लड़कर आए बापू की बातों ने विनोबा पर गहरा असर डाला।

बचपन से ही बंगाल के प्रति खिंचाव और फिर ब्रह्म की खोज में हिमालय जाने की दोनों साधें बापू को मिलकर पूरी हो गई। बापू ने विनोबा को भीम का नाम भी दिया। विनोबा 4–5 घंटे रोज़ पेड़–पौधों को पानी देना, रसोई बनाना, कताई का काम, बुनाई व धुनाई का काम सभी करते। वे बहुत ही मेहनती थे। श्रम करना उनके लिए भगवान की पूजा के समान था। सन 1920 में पंजाब घटनाओं को लेकर देश में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ पर विनोबा ने उसमें भाग लेने से बेहतर समझा कि आने वाली पीढ़ी को शिक्षित किया जाए और वे राष्ट्रीय विद्यालय में पढ़ाई के कार्य में जुटे रहे। सन 1921 में विनोबा वर्धा आए तो वहॉ सत्याग्रह आश्रम चल निकला। यहॉ कताई, बुनाई, धुनाई, खेती, सिलाई, बढ़ई का काम सिखाए जाने के अतिरिक्त रसोई बनाना, बर्तन मांजना, पानी भरना, पीसना तथा पाख़ाना साफ करने का काम सबको करना पड़ता। खाने को लेकर भी विनोबा तरह–तरह के प्रयोग करते।

3 अगस्त 1947 को देश में फैली अशांति मिटाने के लिए विनोबा जी ने शान्ति सेना बनाने का भी प्रयास किया। जिसके सैनिकों को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह का पालन, राजनीतिक दल में न पड़ना, जात–पात आदि के भेद को मिटाना, जनता की निस्वार्थ सेवा करना जैसे – नियमों का पालन करना था।

विनोबा हरिजनों की हालत देखकर बहुत दुखी रहते थे। हरिजनों के पास न रहने को छत, न ओढ़ने को कपड़ा और न ही काम था। वे चाहते थे कि यदि उन्हें कुछ ज़मीन मिल जाती तो वे उस पर काम शुरू कर सकते थे। विनोबा ने पोचमपल्ली के बेरूरी गांव में लोगों के सामने अपनी बात रखी। एक भाई रामचन्द्र रेड्डी ने 100 एकड़ ज़मीन विनोबा को देकर इसका शुभारम्भ किया। बस यहीं से विनोबा जी की 'भूदान की गंगा' बह निकली। विनोबा ने जिन लोगों के पास ज़मीन थी उनसे कुछ हिस्सा ज़मीन का दान में मांगा ताकि वह ज़मीन उन लोगों को दी जा सके जिनके पास बिल्कुल नहीं। विनोबा की पुकार सुन कर लोग खुशी–खुशी बिना ज़मीन वालों को ज़मीन देने लगे। सबसे पहले उन्हें तेलंगाना से 13 हजार एकड़ ज़मीन मिली। तेलंगाना से विनोबा वापिस वर्धा आ गए। 12 दिसम्बर 1951 को विनोबा जवाहरलाल नेहरू जी के निमंत्रण पर दिल्ली के लिए पैदल निकल पड़े। उनका मानना था कि इस यात्रा में वे भूमि का दान मांगते–मांगते दिल्ली जांएगे। वर्धा वासियों ने उन्हें 600 एकड़ जमीन का दान देकर विदा किया।

विनोबा जी का मानना था कि राष्ट्रीय योजना की असली मंशा 'सबको काम सबको रोटी' होना चाहिए। कोई भी योजना सबसे पहले गरीबों को ध्यान में रखकर बननी चाहिए। सबको काम व खाने के लिए जितने गल्ले की आवश्यकता होती है

उतना गल्ला देश में ही पैदा किया जाए। ये दो विनोबा जी के बड़े सपने थे। गरीबी मिटाने को सबसे अच्छा तरीका वे 'प्रेम और करूणा' को मानते थे और 'भूदान' ही इसका एक तरीका है। दिल्ली से भी विनोबा जी को कई हजार एकड़ ज़मीन मिली। 23 मई 1952 में हमीरपुर जिले के इतैलिया गांव के 65 व्यक्तियों में से 64 व्यक्तियों ने अपनी सारी की सारी भूमि विनोबा जी को दान कर दी। उड़ीसा, बंगाल, बिहार, आंध्र, आसाम सभी स्थानों से विनोबा को ग्रामदान भेंट में मिलने लगे।

भूदान के साथ विनोबा जी ने सम्पत्ति दान और बुद्धिदान की मांग शुरू कर दी। इसी बीच 7 सितम्बर 1952 को उन्होंने कांशी की गंदगी मिटाने के लिए 'स्वच्छ कांशी आन्दोलन' शुरू कर दिया। 'गया' जिले में उन्हें अप्रैल में कुछ 26 लाख एकड़ भूमि भूदान में मिली। उड़ीसा के जिले में उन्हें 20 ग्रामदान तथा कोरापुट में उन्होंने 'भूदान यज्ञ' की बात की तो वहां के लोगों ने उन्हे 605 ग्रामदान में दिये और उड़ीसा में विनोबा जी के भूदान आन्दोलन का असर लोगों पर ऐसा सिर चढ़ा कि बहुतो ने तो अपनी पूरी की पूरी भूमि दान दे दी।

विनोबा जी ने पंजाब में चम्बल के बेहड़ों में जो आतंकियों का बरसों से खौफ फैला हुआ था, उसे अपने कार्यकर्ताओं के साथ घूम कर प्रेम सन्देश से समाप्त किया। उनका प्रेम सन्देश था ''डाका डालना, किसी को मारना–पीटना सताना गलत है। जो लोग अभी तक गलत काम करते आये हैं, उन्हे छोड़ दें और अपनी जिन्दगी सुधार लें''। प्रतिदिन विनोबा जी के इन प्रवचनों ने डाकुओं पर ऐसा प्रभाव डाला कि उन्होंने विनोबा जी के आगे हथियार डाल दिए। एक बाग़ी भाई ने तो बम्बई से आकर बाबा के सामने आत्म सर्म्पण किया। इसी प्रकार उन्होने आसाम में हुए उपद्रव को शान्त किया । वहाँ भी प्रेम और सद्भाव का वातावरण बना।

सितम्बर 1962 को जब विनोबा आसाम से विदा हुए तो वहॉ 957 ग्रामदान मिल चुके थे। 14–15 साल की महान यात्रा में उन्हें लगभग 44 लाख एकड़ भूमि भूदान में मिली। 'भूदान' का काम करते हुए विनोबा यही कहा करते थे कि 'मेरा काम ज़मीन बाँटना नहीं, दिलों को जोड़ना है'।

आसाम से सेवाग्राम जाते हुए 1962 में पाकिस्तान में भी विनोबा जी ने प्रेम और करूणा का सन्देश दिया। वहाँ के लोगों ने भी उनका प्रेम से स्वागत किया। विनोबा जी ने वहाँ कहा कि मुझे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में कोई फर्क दिखाई नहीं पड़ता। वही ज़मीन, वही पेड़ पौधे, वही लोग सब कुछ तो वैसा ही है। भूमिहीनों के लिये विनोबा जी ने पाकिस्तान में भी भूमि मांगी। वहाँ की जनता ने भी उन्हें प्रेम से 175 बीघा जमीन भेंट की। भूदान की वह जमीन उसी समय वहाँ के भूमिहीनों को बाँट दी गई।

भाषा की समस्या से तमिलनाडु में भड़की समस्या को भी विनोबा जी ने केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकार के सहयोग से समाप्त किया।

विनोबा जी को तीन बातों की धुन थी – उद्योग की, भक्ति की और खूब सीखने–सिखाने की। खादी और गांव के दूसरे उद्योग धन्धों को बढ़ाने और फैलाने के लिए रात–दिन बेचैन रहते। उनका मानना था कि हमारा गांव वाला देश बिना उद्योग के पनप ही नहीं सकता। देश को बढ़ाना है तो गांवों के उद्योगों को बढ़ाना होगा।

भक्ति विनोबा जी को घर, दादा, मॉ व साधु संतों से मिली। खूब सीखने–सिखाने वाली लगन उन्हें बचपन में ही लग गई थी।

वे बहुत सी भाषाओं के ज्ञाता थे। जैसे – अंग्रेजी, फ्रांसीसी, गुजराती, पंजाबी, असमी, बंगाली, उड़िया, संस्कृत, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम। इसके अतिरिक्त यात्राएं करते समय उन्होंने जर्मन व जापानी सीख ली।

उन्होंने मराठी में कई किताबे लिखी। 'गीताई', 'गीता प्रवचन', स्थितप्रज्ञ–दर्शन', उपनिषदों का अध्ययन' ईशावास्य वृत्ति जैसी किताबें उन्होंने लिखी। सर्वोदय विचार और स्वराज्य–शास्त्र, शिक्षण विचार, विचार पोथी और भूदान, ग्रामदान,

लोकनीति, शान्ति सेना, सर्वोदय पात्र आदि पर भी उनकी बहुत सी किताबें छपी। एक नाथ, ज्ञान देव आदि मराठी संतों पर उन्होंने बहुत अच्छा लिखा। फिर भी विनोबा कहते मैं साहित्यिक नहीं, साहित्यकों का भक्त अवश्य हूँ। विनोबा ने साहित्यिक को ईश्वर से भी ऊँचा माना।

जब भूदान की गंगा ने बढ़ते–बढ़ते क्रान्तिस्वरूप ग्रामदान और ग्राम स्वराज्य का रूप लिया तो विनोबा भावे के सामने एक प्रश्न उपस्थित हुआ कि समग्र क्रान्ति के लिए शक्ति का स्रोत कहाँ से उपलब्ध होगा। सफल क्रान्ति की निष्पत्ति को कौन सी शक्ति टिकाये रखेगी?तब उत्तर में विनोबा जी ने उद्घोषित किया कि समाज में आचार्यकुल का अधिष्ठान और संगठन ही इस क्रान्ति की चालक शक्ति तथा घृति–शक्ति बन सकता है। उन्होंने महसूस किया कि अगर वर्तमान सैनिक–शक्ति संचालित, दण्ड–आधारित समाज को बदलकर परस्पर सम्मति और सहकार के आधार पर स्वावलम्बी समाज की स्थापना करनी है तो उस समाज को टिकाने के लिए भी परिपुष्ट आचार्यकुल की आवश्यकता होगी। उनका मानना था कि आचार्यों के हाथ में सारे देश का मार्गदर्शन होना चाहिए। विभिन्न विचारों के आधार पर 'कहलगांव' में 08–03–68 को 'आचार्यकुल' की स्थापना की गई थी। जिसमें वे शिक्षकों–आचार्यों को स्वतंत्र शक्ति देना चाहते थे।

विनोबा हंसी की छोटी सी बात सुनने पर बच्चे की भांति खिलखिला पड़ते। अपनी माँ, बापू व राम जी की बात करते समय वे रोते भी थे।

विनोबा अपना सारा काम घड़ी से करते। वे अपने समय के साथ–साथ दूसरे के समय की भी कीमत करते थे।

नास्तिक और आस्तिक का भेद बताते हुए विनोबा जी का कहना था कि तुम भगवान को मानते हो तो उन्हें वही करना चाहिए जिससे भगवान खुश हों और भगवान खुश होते हैं – ईमानदारी से, सच्चाई से, दया से, प्रेम से, और सेवा से।

उनका मानना – सबै भूमि गोपाल की।
उनका नारा – जय जगत।
उनकी चाहत – सबको सन्मति दे भगवान।

सितम्बर 1982 को एक दिन बाबा को हल्का सा बुखार आ गया। बेचैनी में रात बीती। श्वास जोरों से चल रही थी, नाड़ी तेज़ थी और सारे शरीर में कंपन्न और पसीना था। डॉक्टर का निदान रहा – 'हार्ट अटैक' उपचार शुरू हुआ। 2–3 दिन के पश्चात बाबा ने दवा दारू लेने से इंकार कर दिया और फिर पानी–आहार भी छोड़ दिया। लेकिन दुर्बलता और थकावट के बावजूद भी वे सचेत थे। उनका चेहरा आध्यात्मिक तेज़ से दमक रहा था। 15 नवम्बर 1982 प्रातः 9:30 बजे वे हमेशा के लिए मौन हो गए। मानों हमेशा की तरह कहा–समाप्तम्। जय जगत। सबको प्रणाम।

राम–हरि

श्रीमती प्रज्ञा शारदा,
सहसचिव, आचार्यकुल चंडीगढ़
भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से वार्तालाप करते हुऐ।

डा. दलजीत कौर

सन्यासी के रूप में जिस ने–जीवन सारा गुजारा

आज भी चमके दूर गगन में
बनकर वह इक तारा

विनोबा जी के तेज से देखो
बदला जीवन सारा

आज भी बहती जिनके गुणों की
इस जग में है धारा

देकर अपना जीवन जिसने
दुनिया को है संवारा

औरों की खातिर जिसने
अपना सुख भी बिसारा

सन्यासी के रूप में जिसने
जीवन सारा गुज़ारा

सुनकर मीठी वाणी जिसकी
डाकू भी मन हारा

देकर दिशा भू–दान की जिसने
अपना कर्ज़ उतारा

कृषि–कृषक के मोल को जिसने
इस जग में है उभारा

जय जगत हो, जय जगत हो
दिया जगत को नारा

सौं वर्षों के बाद भी जिसको
इस जग ने है पुकारा

आज भी चमके दूर गगन में
बनकर वह इक तारा

When conscious is your religion: You become Gandhi and Vinoba Bhave

Shruti Sharda Bhardwaj

The most important thing that we all can still learn from them today is to believe in the "Religion of conscious and our relation with our own self".

The platitude one can show its trumpery, the patriotism one has is admired, but the truth one speaks is profitable which can alone help to make the people love its nation.

This courage to speak the truth is what we find in people who had long ago made an attempt to make its nation independent. I am here referring to all those freedom fighters, including my grandfather Dr. Maaneesh Kumar Sharda who being a man with ego in every difficult condition had the power to dispense justice wherever and whenever it was required, which will always remain in the surroundings till the eternity.

Following the footsteps of Mohandas Karamchand Gandhi and Vinoba Bhave, he not only openly followed the path of truth but also lived a life where society and its norms had no place. He was always aware of the fact that when nobody is paying the bills for his life, he doesn't need to be bothered about what opinion one holds for him. Earning knowledge through every possible source and being a philanthropist was in his blood. Whether it was about taking a stand to reach conclusions that were "True and Right" or feeding the needs of those who seek humanity from elite minded people or serving physically challenged people, he was always there to practice such deeds.

In the year 2009, (when he was paralytic and bed ridden) his refusal to the invitation card of the republic day invitation to the administration on the grounds of calling it a meaningless formality affirmed his complete aversion to politically misleading activities. Owning to

his firmness and inspiration from the believes of Arya Samaj and being an Aryasamaji himself , his thoughts and actions had never ever had even a hint of conspiracy or hypocrisy for that matter. Having spent the tenderest and thought grasping years of my life with him, I never learnt the way of reprimanding anyone from him. Being a dominant by nature, he also knew the tact of challenging control.

After experiencing the most beautiful 'Seven Days" of his life at Sevagram Asharam, he learned what it was about "Giving and not expecting anything in return." For him, observance was his greatest tool when he spent time with his godlike "Mahatma Gandhi." For him, Gandhi's everyday selfless seva to a leprotic Sanskrit scholar shaped him to be more than just politically manipulative in life and do things that lighten up his heart and spirit. Thus, the inculcation of valuing time , doing something without yearning boons in return , valuing the power of karma and believe in God are all those small things that use to prevail in our house .

Another Gandhi's ardent fan Vinoba Bhave made sure that he propagated about non violence and truth among the young men. He worked for the humanity of womankind too. After spending time with Gandhiji and becoming his experimenter, in a span of one year, an out and out women's ashram was formed by him for self reliant women known as Pavnar Ashram . Women inmates who live there still perform all aashram rituals and attend to the foreign dignitaries who come to participate in discussions held on the principles laid down by Gandhiji. Furthermore, to instance a presently preached practice, I must not forget to mention that the much hyped current "Swach Bharat Abhiyaan" was prevailing in the heart of Vinoba Bhave already when he was scavenging people's excreta from the footpaths who would simply not understand what cleanliness a.k.a. godliness meant in life.

In any manner, a lot can be said and told about these self-sacrificing men but what one actually needs to grab from them is there "Originality", i.e... being one a kind, being a human whose existence can still echo when people think of benevolence and valour. Counting the innumerable noble endeavors and acts of humanity by these philosophers cannot be acknowledged in a day; however the most important thing that we all can still learn from them today is to believe in the "Religion of conscious and our relation with our own self."

विनोबा जी के अनमोल वचन

★ किसी की मेहरबानी मांगना, अपनी आज़ादी बेचना है।

★ मनुष्य जितना बोल कर बिगाड़ता है, उतना खामोशी से कभी नहीं।

★ बुरी बातों को भूलना बेहतर होता है। उनको देखते रहने से इंसान हैवान बन जाता है।

★ वही सच्ची प्रार्थना कर सकता है जिसे विश्वास हो कि ईश्वर उसके भीतर है। जिसे यह विश्वास नहीं, उसे प्रार्थना करने की जरूरत नहीं।

★ केवल वही मनुष्य ईश्वर का सच्चा भक्त है जो सपने में भी अपनी भक्ति का पुरस्कार नहीं चाहता।

★ शिष्टाचार और विनय के द्वारा कोई भी व्यक्ति दुनिया में उन्नति कर सकता है।

★ जीवन में सही फैसले करने के लिए मन, इन्द्रियों तथा बुद्धि पर काबू रखना अति आवश्यक है।

★ बड़े बूढ़ों की सेवा से ज्ञान मिलता है।

★ मालकियत त्यागने से भगवान और मानवता दोनों खुश होते हैं।

★ भगवान को जो नाम जिसे प्यारा हो, उसका नाम लें और प्रार्थना करें कि वह हमें सत्य दे, प्रेम दे, करूणा दे।

संकलन कर्त्ता – प्रज्ञा शारदा

विनोबा जी की शिक्षा

डा. देवराज त्यागी

नहीं देखी सर्दी गर्मी ,नहीं धूप छांव रे।
पैदल विनोबा भावे जी चले गांव–गांव रे।।
फिरना है गांव–गांव भूमिदान को,
सेवा में ढाला है अपने जीवन को,
नही कोई घर है ना ही कोई बसेरा,
जहां हो गई संध्या, वही उसका डेरा,
वृक्षों के नीचे है उसका पडाव रे।
नहीं देखी सर्दी गर्मी, नहीं धूप छांव रे।
पैदल विनोबा भावे जी चले गांव–गांव रे।।
कहना है कवि का सुनो मेरे भाई,
बुराई के बदले में करो भलाई,
कभी तुम किसी का भी दिल न दुखाओ रे।।
नहीं देखी सर्दी गर्मी ,नहीं धूप छांव रे।
पैदल विनोबा भावे जी चले गांव–गांव रे।।

मैं 1980 में अनाज एंव दाल प्रशोधन उद्योग का प्रशिक्षण लेने खादी ग्रामोद्योग आयोग के प्रशिक्षण केन्द्र वर्धा गया था तथा वहां पर छह माह प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण अवधि के दौरान हम सेवाग्राम आश्रम तथा परमधाम आश्रम भी गये।

मैं अपने कुछ साथियों के साथ जिसमें कुछ गुजरात से आये छात्र तथा कुछ हरियाणा के छात्रों के साथ विनोबा जी से मिला था। उस समय विनोबा जी का मौन चल रहा था। हम लिख कर उनको प्रश्न करते थे तथा वे उसका लिखकर जवाब देते थे। उन्होंने हमें सन्देश देते हुए कहा कि जैसेः– हम रोज स्नान करते है, तो शरीर स्वच्छ होता है, रोज़ झाड़ू लगाते है तो घर स्वच्छ रहता है। वैसे ही रोज अध्ययन करने से मन स्वच्छ रहता है। इसके साथ ही उन्होंने हमे खादी पहनने के लिये भी कहा तथा हमने वहां पर आजीवन खादी पहनने का संकल्प लिया। उनके प्रेम भरे आदेश से ही हमने खादी को मन से अपना लिया।

संत विनोबा जी प्राकृतिक चिकित्सा में बड़ा विश्वास रखते थे। सन् 1938 में विनोबा जी का स्वास्थ्य बड़ा गिर गया था और उनका वजन मात्र 90 पौंड रह गया था। उनके स्वास्थ्य की गांधी जी को बड़ी चिन्ता हुई तो उन्होंने विनोबा जी को ऊँचे पहाड़ों पर कुछ समय विश्राम करने की सलाह दी। विनोबा जी ने जमना लाल बजाज के पवनार स्थित धाम नदी के बंगले पर रहने की इजाजत ली तथा स्वास्थ्य सुधारने के लिये वहां चले गये। विनोबा जी ने स्वास्थ्य सुधार के लिये अपनी पैथी से काम लिया। पास के खेतो में घण्टों कठिन परिश्रम किया। मूंगफली से बनाया मक्खन और यहां पैदा की गई सब्जियां विनोबा जी का मुख्य भोजन था। दूध की मात्रा बढ़ा दी। इससे उन्हे लाभ हुआ तथा उनका वजन 120 पौंड हो गया तथा उनके किसी मित्र ने पूछा कि आप कैसे ठीक हुऐ तो उन्होंने कहा कि मैंने सारी चिन्ताओं का भार भगवान पर छोड़ दिया। न कोई किताब पढ़ी और न किसी उलझी हुई समस्या पर विचार किया। विनोबा जी स्वास्थ्य सुधारने का दृढ़ संकल्प करके छह महीने में ही स्वस्थ्य हो गये। उनका अच्छा स्वास्थ्य देखकर गांधी जी खुश एंव चिन्तामुक्त हुए। पवनार का वह बंगला साधना धाम बन गया तथा उसको परमधाम आश्रम कहने लगे।

विनोबा की याद में

प्रज्ञा शारदा

विनोबा जी की याद में
छप रही ~~साप्ताहिक~~ किताब
मैं भी लिख डालूँ कुछ
आई मन में ~~विचार~~ बात

कविता लिखूँ, कहानी लिखूँ,
या लिखूँ कोई लेख।
विनायक की याद आते ही,
मस्तिष्क हो गया तेज़।

तृष्णा बढ़ाते जाओगे,
तो बढ़ेगा दुःख।
आत्म विजेता को ही मिलता,
है इस लोक में सुख।

दूसरों को दुख देकर जो,
अपने लिए सुख चाहे।
वह एक वैर से,
दूसरे वैर को पावे।

आया विनायक याद तो,
बहुत सी यादें आई।
सत्य, अहिंसा, प्रेम और
करूणा साथ में लाई।

अपनी पदयात्रा से,
सारा भारत घूमा।
जीमींदार से भूमि मांगी,
भूमिहीन को दीना।

जात–पात को भूल कर,
दिया 'जय जगत' नारा।
भूमि लेने की खातिर,
वामन बन पांव पसारा।

संयम और परिश्रम से,
मानुष हो गया उँचा।
मालकीयत छोड़ने से,
भगवान भी खुश होगा।

यही है शिक्षा विनया की,
'जय जगत' पुकारे जा।
सबके हित के वास्ते,
अपना सुख बिसारे जा।

सर्वोदय धर्म : समुद्र समान

कंचन त्यागी

लोक जीवन में सुधार, परिवर्तन, लोगों में क्रांति लाना आदि काम सरकारी शक्ति से नहीं हो सकते। यदि राजनीति के द्वारा ही काम होता तो महात्मा बुद्ध राजपुत्र ही थे, फिर उन्होंने राजसत्ता क्यों छोड़ी ?

सन्त विनोबा भावे चारो वेदों, 18 उपनिषदों एवं अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। गीता उनके कंठ में वास करती थी। विनोबा जी एक प्रयोगवादी व्यक्ति थे, वे तरह–तरह के प्रयोग करते रहते थे। जहां देश के सभी नेता यह मान बैठे थे कि बिना सत्ता प्राप्त किये कोई भी काम नहीं हो सकता, वहां विनोबा जी ने साढ़े तेरह वर्ष पैदल यात्रा करके जनता को जगाने का नया प्रयोग शुरू किया तथा लगभग 44 लाख एकड़ जमीन दान में लेकर गरीबों में बांट दी।

महात्मा गांधी ने 1917 में दीनबन्धु को विनोबा जी के बारे में बताते हुए कहा था कि "वे आश्रम के दुर्लभ रत्नों में से एक हैं। वे यहां लेने नहीं देने आये हैं।" विनोबा जी खुद को मज़दूर मानते थे इसलिये उन्होंने 32 वर्ष मजदूरी में बिताये तथा जिन कामों को समाज दीन–हीन मानता है जैसे भंगी का काम, बुनाई, बढ़ई का काम, खेती, सूत कताई, कृषि खेती, शरणार्थियों की सेवा आदि की। विनोबा जी कहते थे कि यदि हम तृष्णा बढ़ाते जायेंगे तो दुख बढ़ेगा, इसलिये हमें अपनी आवश्यकतायें कम रखनी चाहिये। जीवन में संयम होना चाहिये। लोक जीवन में सुधार, परिवर्तन, लोगों में क्रान्ति लाना आदि काम सरकारी शक्ति से नहीं हो सकते। यदि राजनीति के द्वारा ही काम होता तो महात्मा बुद्ध राजपुत्र ही थे, फिर उन्होंने राजसत्ता क्यों छोड़ी? उन्होंने लोगों को सन्देश दिया – करूणा करो, प्रेम करो, तृष्णाक्षय करो। सब पर करूणा करनी है तो अपनी तृष्णा कम करनी होगी। दुनिया को बनाने में तीन ताकतें काम करती हैं (1) विज्ञान (2) आत्मज्ञान (3) साहित्य। वैज्ञानिक दुनिया के जीवन को रूप देते हैं जैसे लाउडस्पीकर है तो सब लोग शान्ति के साथ दूर–दूर तक सुनते हैं। जीवन को बदलने वाली चीजें वैज्ञानिकों के कारण होती हैं। आत्मज्ञान जीवन को आकार देता है। जहां आत्मज्ञान पैदा हुआ वहां पूरा का पूरा जीवन बदल गया। गौतम बुद्ध, ईसा–मसीह, मोहम्मद साहब, ज्ञानदेव आदि के आगमन से लोगों के जीवन का स्वरूप बदला। दुनिया को बनाने में तीसरी ताकत साहित्यकों की है। बाल्मीकी, ब्यास, शेक्सपीयर जैसे लोग दुनिया को ऐसी चीज दे गये जो सदा के लिये उसकी मदद में आये। विनोबा जी के सभी काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित हैं।

विनोबा जी ने "सर्वोदय धर्म" को सर्वोतम धर्म माना था क्योंकि इस धर्म में सबके उदय की बात है। हर व्यक्ति को अपने पोषण एवं विकास का पूरा मौका मिलना चाहिये। हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म तो नादियाँ है पर सर्वोदय धर्म कोई नदी नहीं वह तो समुद्र है।

विनोबा जी का भूदान और ग्रामदान

अशोक शरण

गांधी जी कहते थे – केवल अंग्रेजों के छोड़ कर जाने से स्वराज नहीं आएगा। असली स्वराज तभी आएगा जब हमारे गांव स्वावंलनी होंगे, हर हाथ को काम मिलेगा, कोई बेरोजगार नहीं होगा।

१५ अगस्त १९४७ को देश तो स्वतंत्र हो गया परन्तु करोड़ों लोगों को वास्तविक आज़ादी नहीं मिली। गाँधी जी कहते थे केवल अंग्रेजों के देश छोड़ कर चले जाने से स्वराज्य नहीं आएगा। असली स्वराज्य तभी आएगा जब हमारे गांव स्वावलंबी होंगे हर हाथ को काम मिलेगा कोई बेरोजगार नहीं होगा। देश स्वतंत्र होने के सात माह के मध्य गाँधी जी शहीद हो गए। देश का नेतृत्व और लोग इस आकस्मिक घटना से हतप्रभ थे। सरकार की योजनाओं से अंतिम आदमी को लाभ दिखाई नहीं दे रहा था।

करोड़ों भूमिहीन, मज़दूर, किसान, आदिवासियों को देश की आज़ादी का अर्थ समझ नहीं आ रहा था. उनकी स्थिति यथावत थी। उसमे दूर दूर तक कोई सुधार दिखाई नहीं दे रहा था। गाँधी जी के द्वितीय सत्याग्रही पंडित जवाहर लाल नेहरु तो देश के प्रधानमंत्री बन गए। उनके सामने देश चलाने की समस्या थी। उस समय देश राष्ट्रीय– अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे, सुरक्षा, आंतरिक व्यवस्था, डेढ़ करोड़ आबादी का एक देश से दूसरे देश में पालायन, शरणार्थियों को बसाना, दस लाख लोगों का कत्लेआम आदि समस्यायों से जूझ रहा था।

ऐसे समय में गाँधी जी के प्रथम सत्याग्रही संत विनोबा भावे भारत के क्षितिज पर भूदान आन्दोलन के माध्यम से ऐसे उभरे कि उनका यह अनूठा प्रयोग विश्व भर में चर्चित हुआ। विश्व में ऐसा प्रयोग कहीं नहीं हुआ जहां लोगों ने लाखों एकड़ जमीन दान में दी हों। इतना ही नहीं अपनी भूदान यात्रा के दौरान उन्होंने पाकिस्तान सरकार से उस समय के पूर्वी पाकिस्तान में यात्रा की अनुमति मांगी जो उन्हें प्राप्त हुई। उत्तर–पूर्व में आसाम की भूदान यात्रा की वापसी में वे पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) गए जहां उन्हें सोलह दिनों की यात्रा में १७६ बीघा भूमि दान में प्राप्त हुई जिसे उसी समय वहां बाँटा गया। ऐसा क्या देखा था गाँधी जी ने इस विनायक में कि उन्होंने उसे १७ अक्तूबर १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह का पहला सत्याग्रही चुना और विनोबा नाम भी दिया।

देश की बहुसंख्यक आबादी के पास ज़मीन नहीं थी. भूमि पर मुट्ठी भर लोगों का अधिकार था। इसका नतीजा सामने आने लगा। तेलंगाना को लेकर साम्यवादी हिंसक घटनाये सामने आने लगी। ऐसे समय में लोगों को विनोबा भावे में उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी। सर्वोदय समाज ने इस इलाके के शिवरामपल्ली गांव में अपना सम्मेलन करने का फैसला किया। विनोबाजी इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए पैदल निकले। सम्मेलन से वापसी के दौरान पोचमपल्ली गांव में बेज़मीन दलित समुदाय के लोगों ने विनोबा जी के सामने ज़मीन की मांग रखी जो उनकी आजीविका के लिए उपयुक्त हो। चर्चा के दौरान उस

गांव के श्री राम चन्द्र रेड्डी ने १०० एकड़ जमीन देने की बात कही। इसी से प्रेरित होकर आचार्य विनोबा ने भारतीय जनमानस में दान वृति के महत्व को समझ कर भूदान की योजना बनायी। १८ अप्रैल १९५१ को आंध्र प्रदेश के इस गांव की घटना ने देखते–देखते एक आन्दोलन का रूप ले लिया। वर्धा आश्रम लौटने तक ५८ दिनों में करीब २०० गांव में १२२०१ एकड़ ज़मीन दान में मिली। हैदराबाद प्रांतीय सरकार ने इस भूमि वितरण के लिए नियम भी बनाए। धीरे धीरे अन्य प्रान्तों ने भी भूदान की भूमि वितरण के लिए अपने अपने राज्यों में भूदान बोर्ड का गठन किया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारूप बन रहा था. नेहरु ने योजना आयोग के साथ विस्तृत चर्चा करने के लिए विनोबा भावे को निमंत्रण दिया। विनोबा आश्रम से दिल्ली के लिए १२ सितम्बर १९५१ को पैदल ही निकले। इस बार भूदान को व्यापक करने की योजना थी। विनोबा रास्तेभर अपनी बात रखते गए जमीन मिलती गयी। १३ नवम्बर १९५१ को विनोबा दिल्ली पहुंचे, तब तक १९४३६ एकड़ भूदान मिल चुका था।

आचार्य विनोबा भावे ने १३ वर्षों तक देश में लगभग ८०,००० किलोमीटर पैदल घूम–घूम कर लोगों से ज़मीन दान में मांगी जिससे ४७,६३, ९३६ एकड़ ज़मीन प्राप्त हुयी जिसमें अब तक पच्चीस लाख एकड़ ज़मीन बँट चुकी थी जब कि सीलिंग द्वारा पचास लाख एकड़। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। हिंसा के माध्यम से कितनी जमीन बँटी, कानून के माध्यम से कितनी ज़मीने बॅटी. तेलंगाना में इतनी हिंसा हुई फिर भी एक एकड़ ज़मीन किसी को नहीं मिली। नक्सलबाड़ी में इतना खून खराबा हुआ फिर भी किसी को ज़मीन नहीं मिली। इस तरह जमीन के बटवारे में हिंसा और कानून की अपेक्षा करुणा और दया का मार्ग अधिक सफल हुआ है।

गांधी जी के ग्रामस्वराज्य की परिकल्पना को पूर्ण करने के लिए भूदान की भांति ग्रामदान का विचार भी सामने रखा गया जिसकी कल्पना इस प्रकार थी:–

१. गांव में कम से कम ७५ प्रतिशत ज़मीन मालिक अपनी मलिकी गांव–समाज को समर्पित करे। गांव–समाज यानि गांव के सभी बालिग स्त्री–पुरुषों से बनी ग्रामसभा। गांव को इस तरह समर्पित ज़मीन ग्राम सभा के नाम रहेगी।

२. वह जमीन गांव की ज़मीन का कम से कम ५१ प्रतिशत हिस्सा हो।

३. गांव के कम से कम ७५ प्रतिशत लोग ग्रामदान को मान्य करें।

४. गांव को समर्पण हुई हर एक जमीन मालिक की ज़मीन का ५ प्रतिशत हिस्सा निकाल कर भूमिहीनों में बाँटा जाये।

५. शेष ९५ प्रतिशत जमीन मूल मालिकों तथा उनके वारिसों के पास रहेगी. उसका हस्तांतरण केवल गांव के अन्दर ग्रामसभा की अनुमति से होगा।

६. गांव के लोग अपनी आय या उत्पादन का २.५ प्रतिशत हिस्सा नियमित रूप से ग्रामसभा को दें जिसका ग्राम कोष बने। इसका उपयोग गांव के जरूरतमंदों की मदद के लिए, गांव के आर्थिक विकास के लिए या अन्य उपयोगी सार्वजानिक कार्यों के लिए हो।

इन शर्तों को मान्य करने पर ग्रामदान माना जायेगा. ग्रामदान की इस कल्पना के आधार पर देश में ग्रामदान की संख्या बढ़ने लगी। कानूनी वैधता देने के लिए अनेक प्रदेशों ने अलग अलग कानून बनाये। १९६९ में राजगीर सर्वोदय सम्मेलन के समय आन्दोलन अपने चरम पर था। बिहार के ६००६५ गांव ग्रामदान के अधीन आ चुके थे और देश में ग्रामदानो की संख्या १३७२०८ तक पहुंची थी। ग्रामदान कानूनों के तहत ३९३२ ग्रामदान आज भी है और उन्हें सक्रिय करने की चेष्टा हो रही है।

किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आज़ादी बेचना है।

संजय भारतीय

संत विनोबा जी का जीवन हम सब के लिए प्रेरणाप्रद है। हम हमारे जीवन में अनेकानेक महापुरूषों के जीवन के बारे में पढ़ते व सुनते रहते हैं। लेकिन बहुत ही कम व्यक्ति हैं जो उनके प्रेरक गुणो को वरणयोग्य समझकर उनका अनुसरण करके अपने जीवन में कुछ सुधार ला पातें हैं। आईये आज उस महान विभूती के प्रेरक विचारों को आत्मसात करते हुए उनके प्रेरणादायी विचारों में से किसी एक विचार को चुनकर उसे अपनाने की कोशिश करतें है जिससे चण्डीगढ आर्चायकुल का संत विनोबा जी की जयन्ति मनाने का यह पुनीत कार्य सार्थक हो पायेगा।

आज की भागदौड़ एवं परस्पर प्रतिस्पर्धात्मक जिन्दगी में हम हर संभव सफलता को सुनिश्चित करने के लिए अपना तन, मन व धन लगाते रहते है। जब हम येन्, केन्, प्रकरेण के माध्यम से अपनी समस्याओं के निराकरण में जुटते हैं तो हमें महापुरूषों की, अपने पूर्वजों की बातों का ध्यान नहीं रहता। हमारा सम्पूर्ण ज्ञान मानो नष्ट हो जाता है, और उस पल हम अपने सारे आदर्श भूलकर कोई भी निषिध कर्म कर बैठते हैं। संत विनोबा जी अपने पूरे जीवन में गाँधी जी के आदर्शो के अनुवर्ती रहें।

विनोबा जी कहा करते थे **"किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आज़ादी बेचना है।"**

विनोबा जी की यह युक्ति सार्थक और विज्ञान सम्मत है अगर कोई भी व्यक्ति इसे अपने जीवन मे अपनाता है तो वह जीवन भर आनन्दित रह सकता है।

हम आज अपना कार्य निकालने के लिए अपने सम्बन्धों को उपयोग में लाते है। कुछ व्यक्ति तो सम्बन्ध ही इसलिए बनाते हैं कि उन सम्बन्धियों से किसी न किसी दिन अपना अनुचित अथवा समय से पहले या वरीयता के विरूद्ध कार्य करवा सकें, ऐसे व्यक्ति ये भूल जाते है कि आज नही तो कल सामने वाला व्यक्ति भी आपसे अपने अनुचित कार्य करवायेगा। उस समय आप अपने आप को बंधा हुआ महसूस करेंगें जो कि आपको अपनी आज़ादी बेचने जैसा ही प्रतीत होगा। उसके बाद यह सिलसिला यूँ ही लगातार चलता रहेगा और दोनो पक्ष के व्यक्ति ना चाहकर भी एक दूसरे के अनुचित कार्य करते रहेगें।

मैं अपने जीवन में जितना भी कुछ अच्छा कर पाया हूँ उसका श्रेय मेरे नाना जी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती एवं मामा जी को जाता है। मेरे मामा मुझे अक्सर इसी युक्ति को समझाया करते थे। मेरे बहुत सारे मित्र मेरे घर आते जाते रहते थे। मेरे मामा अक्सर मुझसे पूछते थे कि बेटा ये क्या करने आते हैं। मैं उन्हे बता देता था कि मामा जी मेरी कक्षा का कुछ कार्य छूट गया था मेरे मित्र उसमे मेरी मदद करने आते हैं। मेरे मामा जी बहुत सख्त नाराज़ होते थे और कहते थे कि

"आज आप इनसे अनावश्यक सहायता ले रहे हो कल आपको भी इनकी सहायता करनी पड़ेगी" और सम्भवत: ये आपसे अपने किसी अनुचित कार्य में भी मदद मांगेगे और आप मना भी नही कर पाओगे। उस वक्त मुझे नही मालूम था कि मेरे मामा जी पूर्वजों द्वारा बतायी आचार्य संत विनोबा जी द्वारा प्रतिपादित मर्यादाओं का ही ध्यान दिलाकर मुझे सत्यमार्ग पर चलने की सीख दे रहे थे। मेरे वो मामा जी एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में ऐसे पद पर कार्य कर रहे थे जिस पर रिश्वत लेना आम बात थी लेकिन गाँधी जी एवं सतं विनोबा जी के सिन्द्धांतो का उनके जीवन में इतना गहरा प्रभाव था कि उनको भ्रष्टाचार कभी छू भी नहीं पाया। एक और उनकी अच्छी बात याद आती है एक बार हमारे घर में कोई फलों की टोकरी दे गया हम बच्चे थे, रात को मामा जी आये उस वक्त तक हम बच्चे फलों की टोकरी से कुछ फल खा चुके थे। जैसे ही पता चला कि मामा जी आ चुके है। हमारी आदरणीय मामी जी ने हमें पहले ही समझाया था कि फल नहीं खाने आपके मामा जी नाराज़ होगें, लेकिन मामा जी के आने के बाद हमें फंसा देख मामी जी ने हमें एक युक्ति सुझायी कि ऐसा करो फलों को पंलग के नीचे छुपा दो। लेकिन गलत कार्य कभी छुपा नहीं करते। अतएव मामा जी को फलों की सुगंध आ गयी उन्हे पता चल गया और वह फलों की टोकरी पकड़ी गयी। हमें मामा जी ने बहुत डांटा और वह सारे फल घर से बाहर फिंकवा दिये और उसके बाद हमें भी ये बात समझायी कि जो व्यक्ति फल देकर गया था मैनें कल उसकी जमीन का मुकद्दमा सुनना है और अगर मैं या मेरे बच्चे ये फल खायेंगें तो उसकी मेहरबानी के कारण मैं उचित फैसला नहीं ले पाँऊगा। मैनें अपने मामा जी को हमेशा इसी राह पर चलता भी पाया। धन्य है वो लोग जो महापुरूषों की बातों को केवल सुनते नहीं थे उनके ऊपर वैसा ही अमल भी करते थे। आज समाज को ऐसे लोगों को सम्मानित करना चाहिए। मामा जी के ऐसे आर्दशवादी विचारों का एक और गहरा कारण भी था वो थे मेरे नाना जी। मेरे नाना जी गाँधी जी से देश सेवा की शिक्षा दीक्षा लेकर, उस समय की पुलिस सब इंस्पैक्टर की नौकरी छोड़कर गाँधी जी के आहवान पर राष्ट्र सेवा के लिए, गाँधी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन में तन, मन, धन से कूद पड़े थे। उन्होनें बागपत क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्व हल्ला बोलते हुए अपने आप को अंग्रेजों का दुश्मन बना लिया था। जिसके फलस्वरूप उन्हें कारावास जाना पड़ा था। मेरे नाना जी गाँधी जी एवं विनोबा जी के विचारों को ही लेकर अपने पूरे जीवन में चले और उन्होनें अपने परिवार अपने पुत्रों, पोत्रों एवं मुझे एवं मेरे समस्त भाइयों, बहनों को भी अपने उन्हीं सिद्वान्तों पर चलना सिखाया जिन्हें गाँधी जी एवं विनोबा जी मानते थे। मेरे नाना जी कई भाषाओं के ज्ञाता एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे आर्यपद्वति का अनुसरण करते हुए बाद में सन्यास आश्रम में प्रवेश कर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती कहलाए और उन्होने 4 पुस्तकें भी लिखी।

विनोबा जी के इस कथन को अगर हम अपने जीवन मे उतारे कि **"किसी भी अपने परिचित से उसकी अपने लिए, अपने किसी भी कार्य के लिए किसी भी अनुचित मेहरबानी को हम मत मांगे।"** अपना कोई भी कार्य विशेष बना कर हम वरीयता से विरूद्व ना करवाये तभी आप भी अपने किसी परिचित का अनुचित कार्य करने या उसको अनुचित लाभ देने से बच पायेगें। अगर हम सब आज प्रण लें कि हम अपने किसी भी परिचित से न तो अनुचित लाभ लेंगें और न ही किसी को अनुचित तरीके से लाभ पहुँचायेंगे और यह सिद्वान्त हम अपने बच्चों को भी सिखाये तो हम हमारे पूर्वजों और संत विनोबा जी के इस कथन कि "किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आज़ादी बेचना है" को अपने जीवन में आत्मसात कर पायेंगें और हमारा उनकी जंयती मनाने का यह प्रयोजन भी सार्थक हो पायेगा और हमारी व्यक्तिगत आज़ादी भी बची रहेगी।

संत विनोबा जी

पुनीता बावा

- अटल, अडिग, अद्‌भुत अतिज्ञानी,
  संत विनोबा का ना कोई सानी।
- धर्म, सुकर्म, परहित का चेता,
  वैरागी, देशप्रेमी, दुःखीजन का दुःख हर लेता।
- न' को 'हाँ' कोई करवा ना पाया, 'हाँ' न बदली 'न' में,
  दूर–सुदूर पग थम ना पाए, बढ़ चला जिस दिशा में।
- बच्चों संग बच्चा बन जाता, दीन–हीन का 'बाबा',
  माँ का 'विन्या', मित्रों का 'विनू' गांधीजी का 'विनोबा'।
- नियम, अनुशासन ले प्रभु का नाम जहां विराजे वही इक धाम,
  पुस्तक अध्ययन मौन और चिंतन, उन्हें न तेरा–मेरा से कुछ काम।
- बहुभाषा ज्ञानी, शिष्य बन अध्ययन, गुरू बन शिक्षण,
  जीवन खुली पाठशाला जहाँ निरत् रहा चिंतन मनन।
- प्रकृति–प्रेमी, माँ के दुलारे मुख पे मुस्कान चित्त में करूणा धारे,
  भू पे जन्में, भू के प्रेमी, भू–माँग धनवानों से निर्धन तारे।
- शिक्षा को 'शस्त्र' सा मानें, शास्त्रों को जो चुन–चुन जाने,
  राजनीति से कोसों दूर, जिन्हें दीन–हीन सब नायक मानें।
- पाखण्डों को कटु जवाब, प्रिय विषय रहा जिनका हिसाब,
  नीरव आकाश में संगीत खोजते 'गीताई' को दिया उद्‌भाव।
- स्वच्छंद भाव, और स्वच्छता प्रेमी, माने कण–कण में भगवान,
  पंच तत्वों को सार मानकर, तजा लोभ, मोह, पाया अंर्तज्ञान।
- एक ही नारा उनका गूँजे 'जय जगत' बस 'जय जगत्',
  सकल ब्रहमांड, न कोई सीमा, न कोई बंधन, सृष्टि की सेवा 'जय जगत'।
- उनके हस्ताक्षर 'राम हरि' भीतर जिसमें एक छुपा सार,
  रामनाम में छुपी है 'भक्ति' हरि करें मोहमाया से पार।

जब विनोबा भावे पंजाब में आए
एक साक्षात्कार

के.के.शारदा (बाएं) से बातचीत करते हुए प्रेम विज (दाएं)

भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे का नाम सुनते ही एक ऐसे महापुरूष का चेहरा सामने आ जाता है जिसने स्वतंत्रता आंदोलन और भूदान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसे महापुरूष के दर्शन करना ही अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। के. के. शारदा जी ऐसे ही सौभाग्यशाली व्यक्ति है। उनसे विनोबा जी के बारे में बहुत सी जानकारी प्राप्त की, जिसे आम पाठक जानना चाहता है। इससे पहले बातचीत को प्रस्तुत करू, मैं विनोबा जी तथा शारदा जी के बारे में पाठकों को बताना चाहूँगा।

आचार्य संत विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 में महाराष्ट्र के गागोदा गांव में हुआ था। वे बहुत ही शिक्षित थे। उन्होंने वेदों और उपनिषदों का भी अध्ययन किया था। विनोबा भावे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के प्रिय शिष्यों में से थे। गांधी जी ने विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही के रूप में चुना। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आपने जेल यात्रा की। भूदान आंदोलन में विनोबा भावे जी का योगदान उल्लेखनीय रहा। साढ़े तेरह वर्ष तक पदयात्रा करते हुए लगभग 44 लाख एकड़ भूमि दान में लेकर भूमिहीनों में बांटी। विनोबा भावे जी की दृष्टि भी वही थी जो गांधी जी की थी।

अब मैं के. के. शारदा जी के बारे में बताना चाहूँगा। शारदा जी को पत्रकारिता और प्रशासन के पद का अनुभव प्राप्त है। वे स्वतंत्रता सेनानी परिवार से सम्बंध रखते हैं। उनकी माता और पिता जी ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। उनके घर स्वतंत्रता सेनानियों, नेताओं और महापुरूषों का आना–जाना रहता था इसलिए उन्हें उन महापुरूषों से मिलने व उन्हें देखने का खूब मौका मिला।

शारदा जी को सबसे ज्यादा प्यार खादी से है। आपने खादी आंदोलन में हिस्सा लेने तथा खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए पत्रकारिता को छोड़ दिया।

आपने विनोबा भावे जी के दर्शन किए। इनकी माता जी ने विनोबा जी की देखभाल भी की थी। इन सब मुद्दों पर शारदा जी से बात हुई जो इस प्रकार है –

प्रश्न :– भारत विभाजन के समय आप कहाँ थे?

के. के. शारदा :– मेरा जन्म मेरे नाना के घर लुधियाना में हुआ। जबकि मेरा परिवार लाहौर में रहता था। विभाजन के पश्चात मेरा परिवार होशियारपुर के पुरहीरां गांव में आ गया। मेरे पिता एम. के. शारदा और माता श्रीमती विभा शारदा ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया तथा तीन बार जेल भी गए। वे सरगोदा (मीयांवाली) तथा जांलधर जेल में रहे।

प्रश्नः– आपने फोटो पत्रकारिता कब तक की?

के. के. शारदा :– मैं उस समय के लोकप्रिय समाचार पत्र वीर प्रताप में वर्ष 1966 से 1975 तक फोटो पत्रकार के रूप में कार्यरत रहा। इस समय के दौरान मुझे अनेक महापुरूषों और नेताओं को नजदीक से जानने और देखने का अवसर मिला। मुझे शहीद–ए–आजम भगत सिंह की माता विद्यावती से मिलने का मौका भी मिला। वह बीमार थी तथा इलाज के लिए जालंधर के सिविल अस्पताल में दाखिल थी। उन्हें मिलकर मैं धन्य हो गया। इसके अलावा ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह और प्रसिद्ध अभिनेत्री व समाज सेविका नरगिस आदि से भी मिला।

शहीद भगत सिंह की बीमार माता विद्यावती जी का कुशल–क्षेम पूछते हुए के॰के॰ शारदा जी

प्रश्न :– विनोबा जी को आप कब मिले?

के. के. शारदा :– आचार्य विनोबा भावे जी को मेरे पिता एम. के. शारदा मिले थे क्योंकि मेरे पिता जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के सिद्धान्तों से बहुत प्रभावित थे। यह बात वर्ष 1965 या 1966 की है जब विनोबा जी भू–दान आंदोलन के सम्बंध में जालंधर पधारे थे। तब हम मॉडल टाउन जालंधर में रहते थे। विनोबा जी किसी के घर नहीं ठहरते थे। वे गीता मंदिर में रूके वहॉ मेरी माता जी विभा शारदा उनको मिलने गए तो मैं भी उनके साथ गया। विनोबा जी खाने में सिर्फ दही और शहद का सेवन करते थें क्योंकि उनके पेट में अलसर था। मैं उनके लिए घर से दही, शहद लेकर आया था।

प्रश्न :– जब आपने विनोबा जी के दर्शन किए तो कैसा अनुभव हुआ?

के. के. शारदा :– जब मैंने पहली बार विनोबा जी को देखा तो मेरी उम्र 18 वर्ष की थी। वे देखने में एकदम संत नज़र आते थे। उनके चेहरे पर नूर था और वाणी में बहुत मिठास थी। मेरा दिल चाहता था कि उन्हें लगातार निहारता रहूँ।

प्रश्न :– विनोबा जी की दिनचर्या कैसी थी?

के. के. शारदा :– विनोबा जी सुबह जल्दी उठ जाते थे फिर चरखा कातते थे। इसके पश्चात वे भू–दान के लिए चल पड़ते थे। किसी से कुछ भी मांगना और फिर दूसरों के लिए मांगना बहुत बड़ी बात है। विनोबा जी लोगों से भूमि दान में लेकर भूमिहीनों में बांट देते थे। बहुत बड़ी बात है कि भूमि दान करने वाले लोग जमीन की रजिस्ट्री लेकर लाइन में खड़े हो जाते थे और जरूरतमंद लोग भी भूमि लेने के लिए एकत्रित हो जाते थे।

प्रश्न :– उनकी वेशभूषा और बातचीत का ढंग कैसा था?

के. के. शारदा :– विनोबा जी धोती और कभी–कभी कुर्ता पहनते थे और सिर को सफेद या हरे कपड़े से धूप से बचने के लिए ढकते थे। वे बहुत धीमे बात करते थे। केवल पास बैठा व्यक्ति ही उन्हें सुन पाता था। वे पदयात्रा करते थे और किसी वाहन का प्रयोग नहीं करते थे। 15 वर्ष तक

उन्होंने पदयात्रा की और लगभग 70,000 किलो मीटर पैदल चले।

प्रश्न :– विनोबा जी लोगों को प्रवचन में क्या कहते थे?

के. के. शारदा :– वे लोगों को प्रवचन किसी विशेष धर्म या विषय पर नहीं देते थे बल्कि लोगों से बातचीत में ही उन्हें जीवन का दर्शन बताते थे। उनका प्रवचन अधिकांश संध्या के समय होता था और वे लोगों की बातों को लोगों की भाषा में ही समझा देते थे। किसी कठिन विषय या कठिन भाषा का प्रयोग नहीं करते थे।

प्रश्न :– आपके माता–पिता गांधी जी एवं विनोबा जी के सिद्धान्तों व विचारों से प्रभावित थे। उनके विषय में कुछ जानकारी दें?

के. के. शारदा :– विनोबा जी का पूरा जीवन ही प्रेरणा से भरा हुआ था। लोग उनके जीवन से दिशा लेकर आगे बढ़ते थे। विनोबा जी पदयात्रा के दौरान मध्य प्रदेश पहुँचे तो वहाँ के डाकू जो लूट–मार कर अपना जीवन व्यतीत करते थे, विनोबा जी के जीवन से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने हिंसा का मार्ग छोड़कर बंदूकें विनोबा जी के चरणों में समर्पित कर दी।

मेरे पिता मानीष कुमार शारदा और माता विभा शारदा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और आचार्य संत विनोबा भावे जी के जीवन और सिद्धान्तों से अत्याधिक प्रभावित थें। जब मेरे पिता गांधी जी के आश्रम में रहकर आए तो उन्होंने अपने सभी कपड़े जला दिए और खादी धारण कर ली। फिर आजीवन खादी ही पहनी। उनके कमरे में उन दोनों महापुरूषों की फोटो लगी होती थी। वे हर रोज सुबह 4 बजे से 5 बजे तक एक घण्टा सूत कातते थे और उसी सूत का कपड़ा बनाकर पहनते थे। उन्होंने पूरा जीवन इन्हीं नियमों का पालन किया।

प्रश्न :– आप खादी के प्रति कैसे आकर्षित हुए?

के. के. शारदा :– मैं खादी के प्रति शुरू से ही आकर्षित था फिर इसका प्रोत्साहन घर से भी मिला। खादी के लिए ही मैंने पत्रकारिता को छोड़ा। 28 वर्षों तक पंजाब खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड में महत्वपूर्ण पद पर कार्य किया और उसके पश्चात खादी सेवा संघ में चेयरमैन के पद पर काम करने लगा। अभी भी मैं अनेक खादी संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ।

प्रश्न :– आचार्यकुल संस्था के बारे में और विनोबा जी के 120वें जन्मदिवस पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की जानकारी दीजिए।

के. के. शारदा :– आचार्यकुल की स्थापना स्वयं विनोबा जी ने 1968 में की और चंडीगढ़ में आचार्यकुल ने वर्ष 1997 में कार्य शुरू किया। आचार्यकुल की ओर से प्रतिवर्ष कुछ महत्वपूर्ण समारोह आयोजित किए जाते हैं जैसे – 11 सितंबर को विनोबा भावे जी की जयंती मनाई जाती है। 2 अक्टूबर को गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी का जयंती समारोह आयोजित किया जाता है। गांधी जी की पुण्यतिथि 30 जनवरी को और कस्तूरबा गांधी जी की पुण्यतिथि 22 फरवरी को मनाई जाती हैं। शहीद–ए–आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू का शहीदी दिवस 23 मार्च को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। महिलाओं को जागृत करने के लिए 8 मार्च को महिला दिवस का आयोजन किया जाता है। साहित्यिक गतिविधियों के अन्तर्गत उभर रहे लेखकों को मंच प्रदान किया जाता है, काव्य गोष्ठी और पुस्तकों का विमोचन भी किया जाता है। स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों के सम्मान में समारोह आयोजित किये जाते है। जरूरतमंद होनहार बच्चों की सहायता की जाती है।

इस वर्ष विनोबा भावे जी की 120वीं जयंती भव्य रूप से मनाई जा रही है। 11 सितम्बर को एक बड़े समारोह का आयोजन किया जाएगा। विनोबा जी के जीवन और सिद्धान्तों पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। इस अवसर पर भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने वाली शख्सियतों को सम्मानित किया जाएगा।

विनोबा भावे जी के जीवन की झलकियाँ

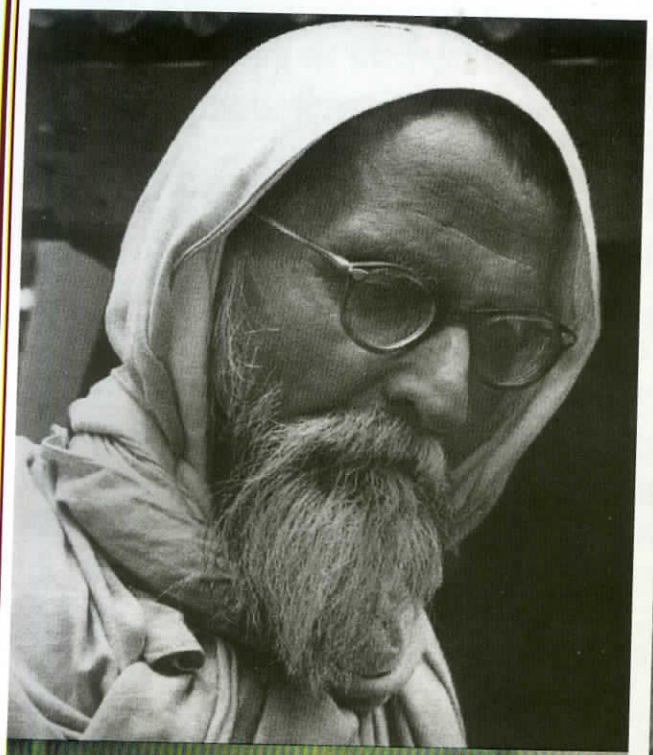

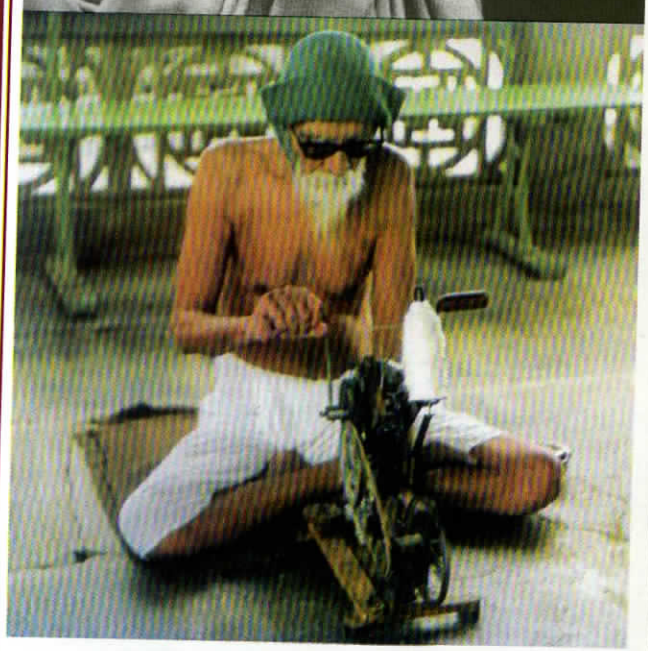

चरखे पर कताई करते हुए

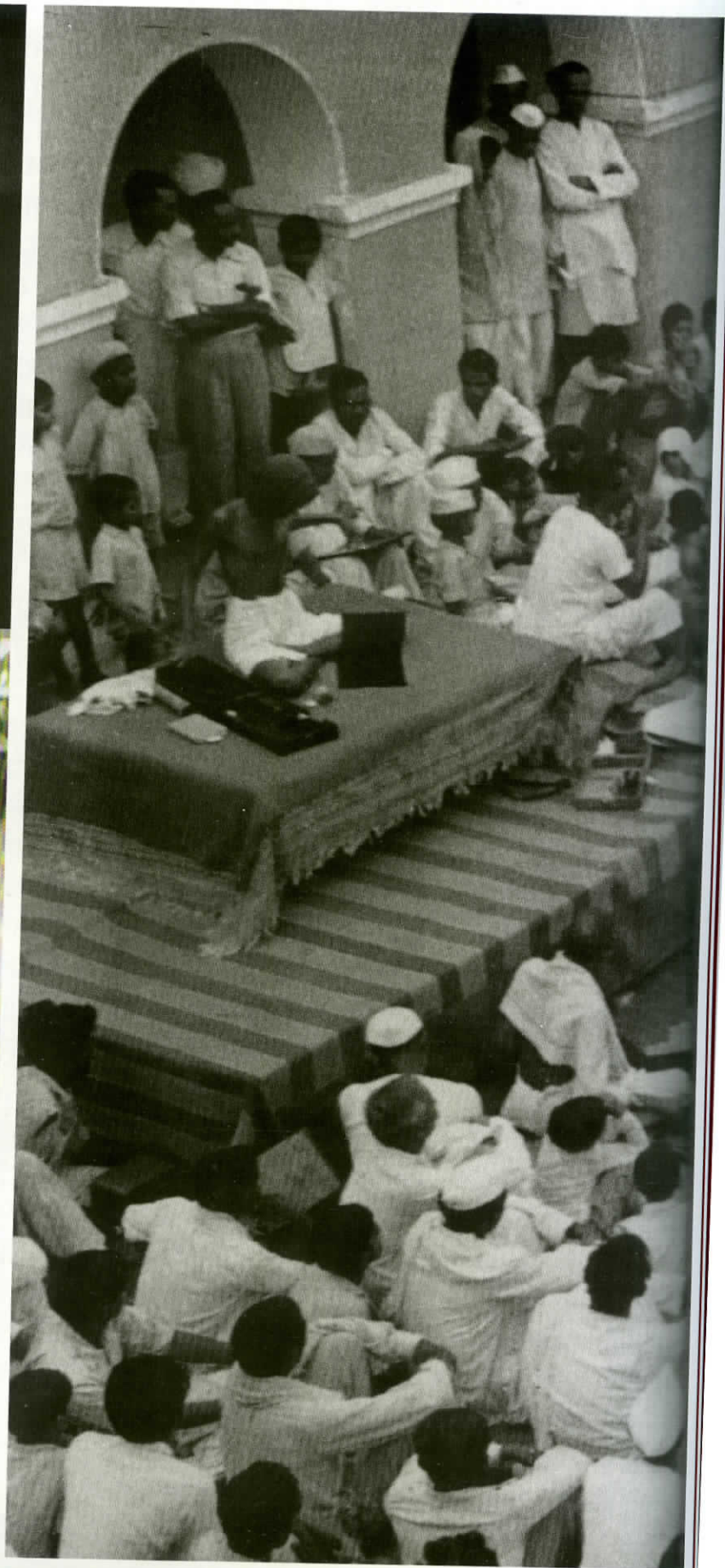

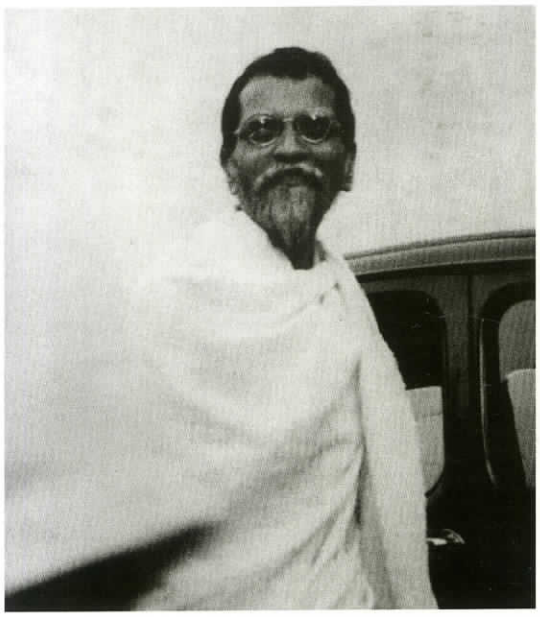

संत रूप विनोबा

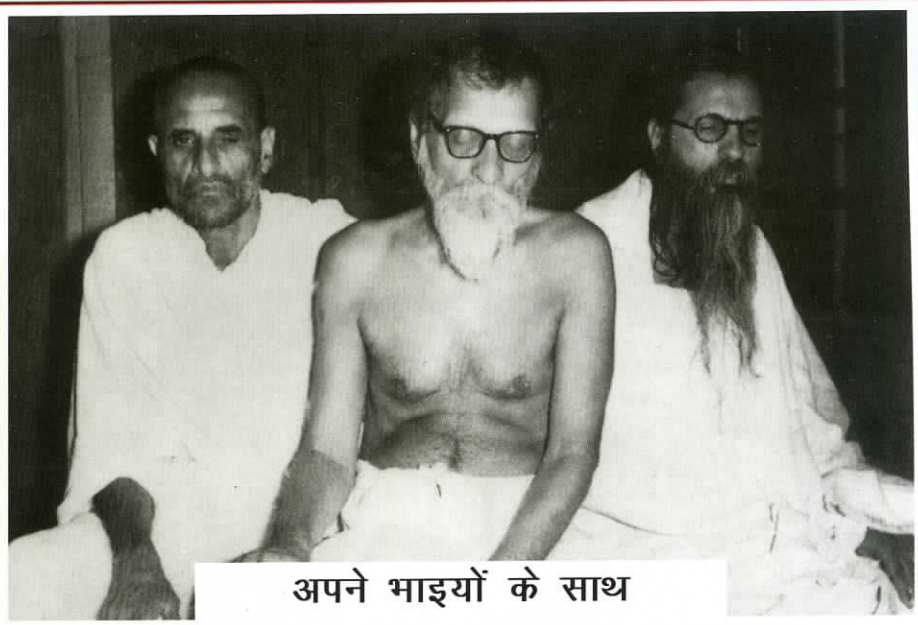

अपने भाइयों के साथ

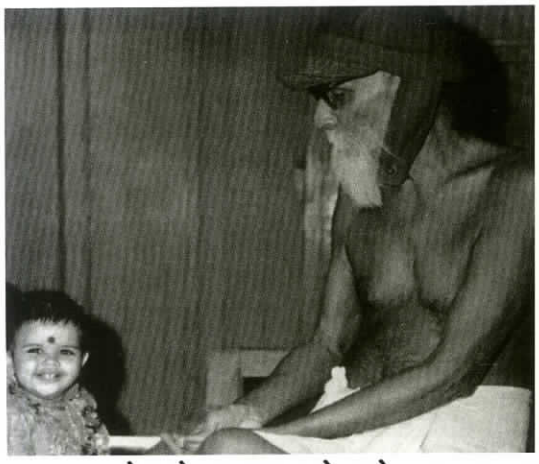

बच्चे के साथ खेलते हुए

खाना बनाते हुए

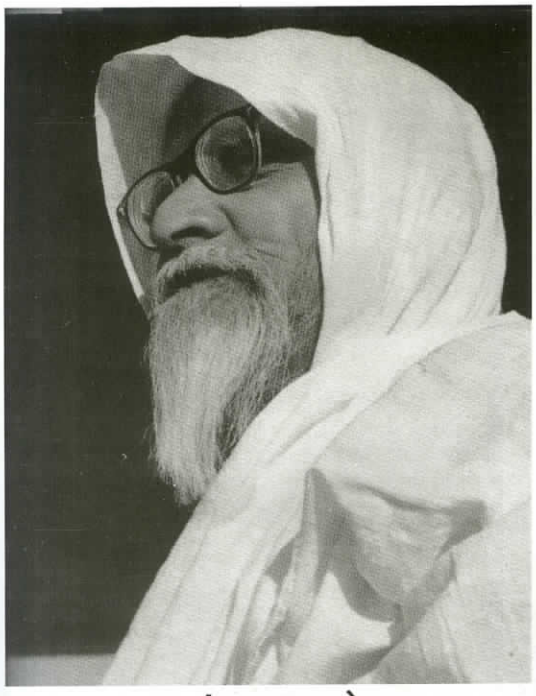

शांत मुद्रा मे

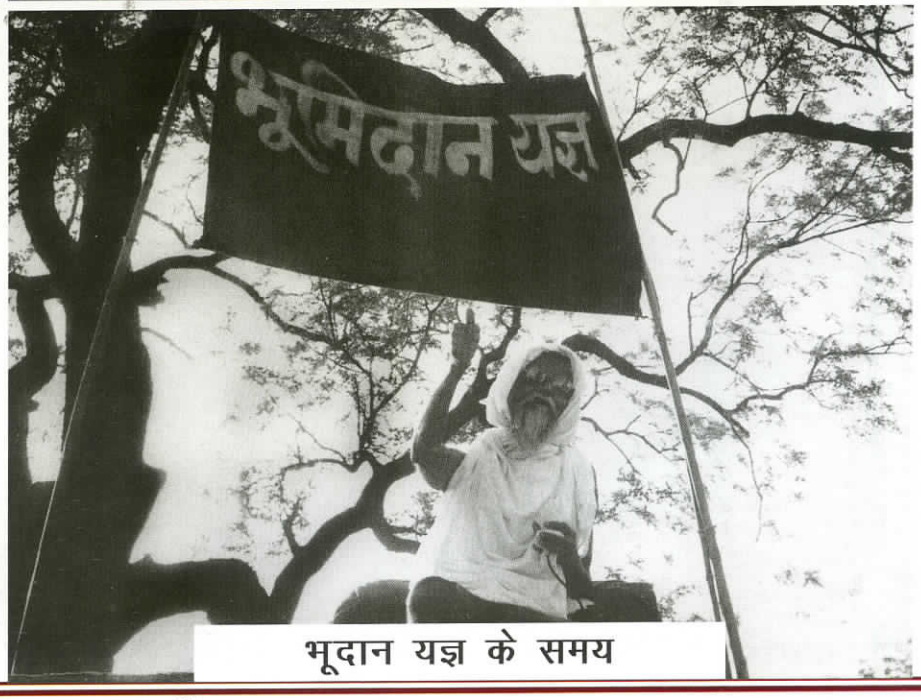

भूदान यज्ञ के समय

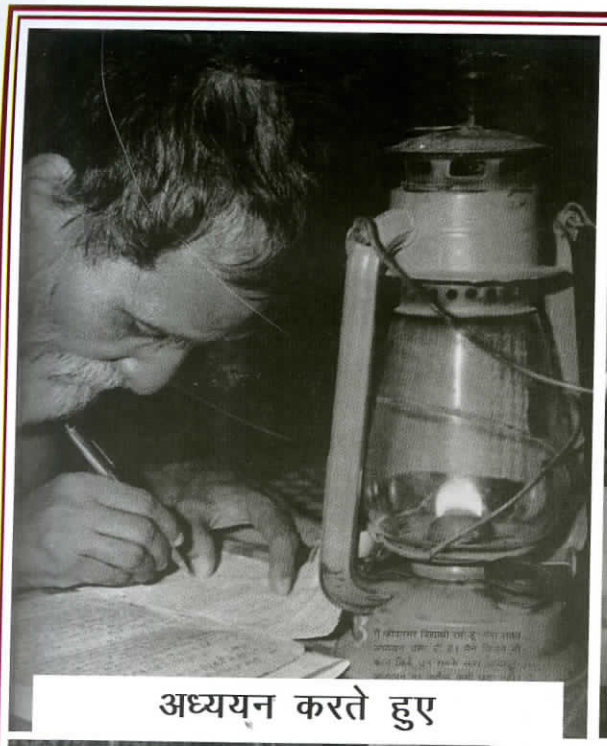

अध्ययन करते हुए

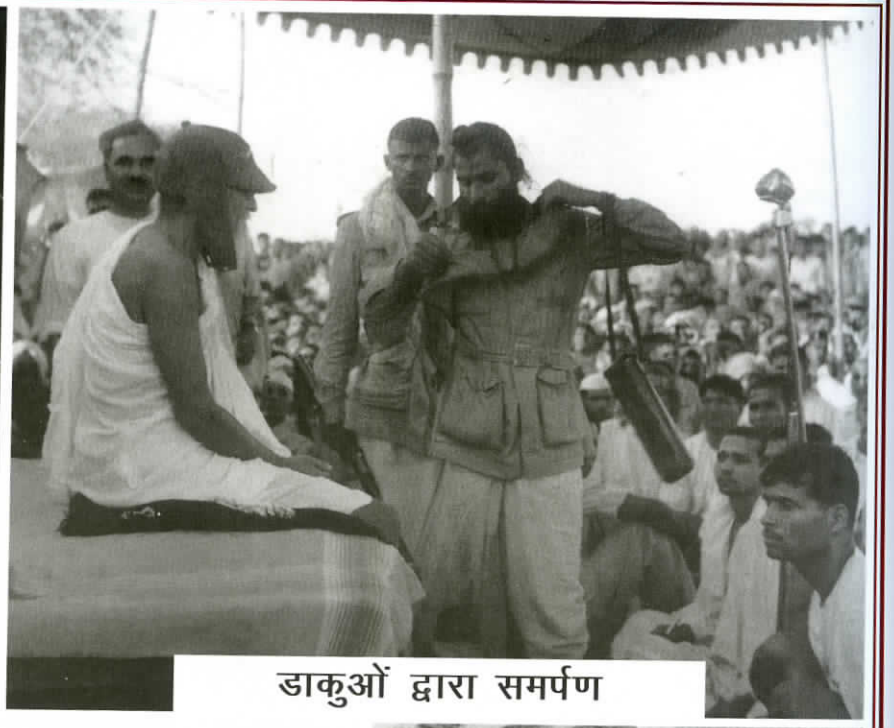

डाकुओं द्वारा समर्पण

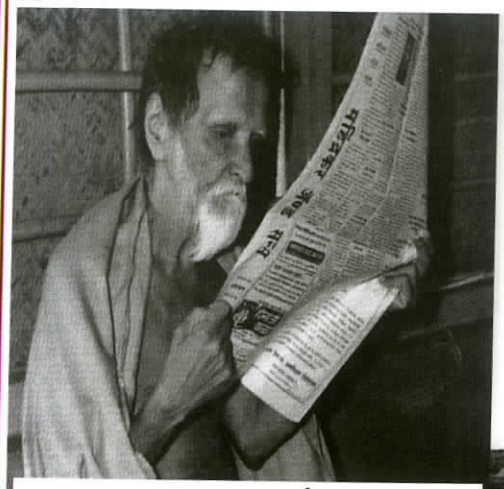

समाचार पढ़ते हुए

ध्यान
अवस्था में

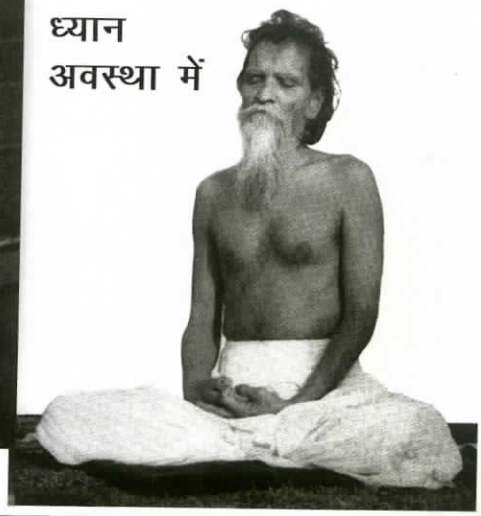

महात्मा गांधी जी के साथ

पद यात्रा के दौरान

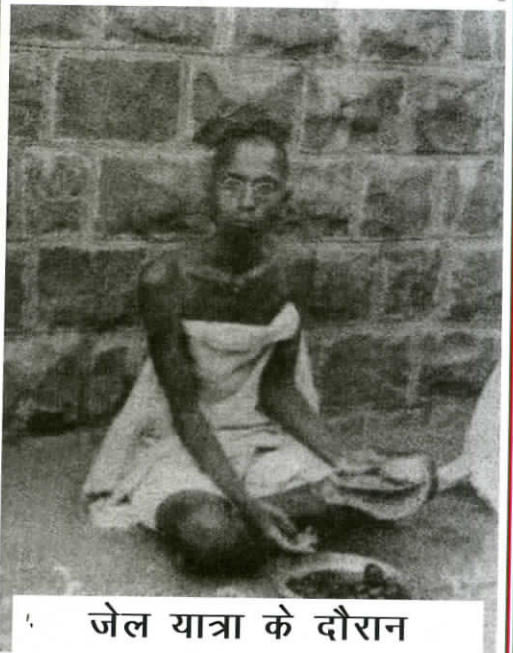

जेल यात्रा के दौरान

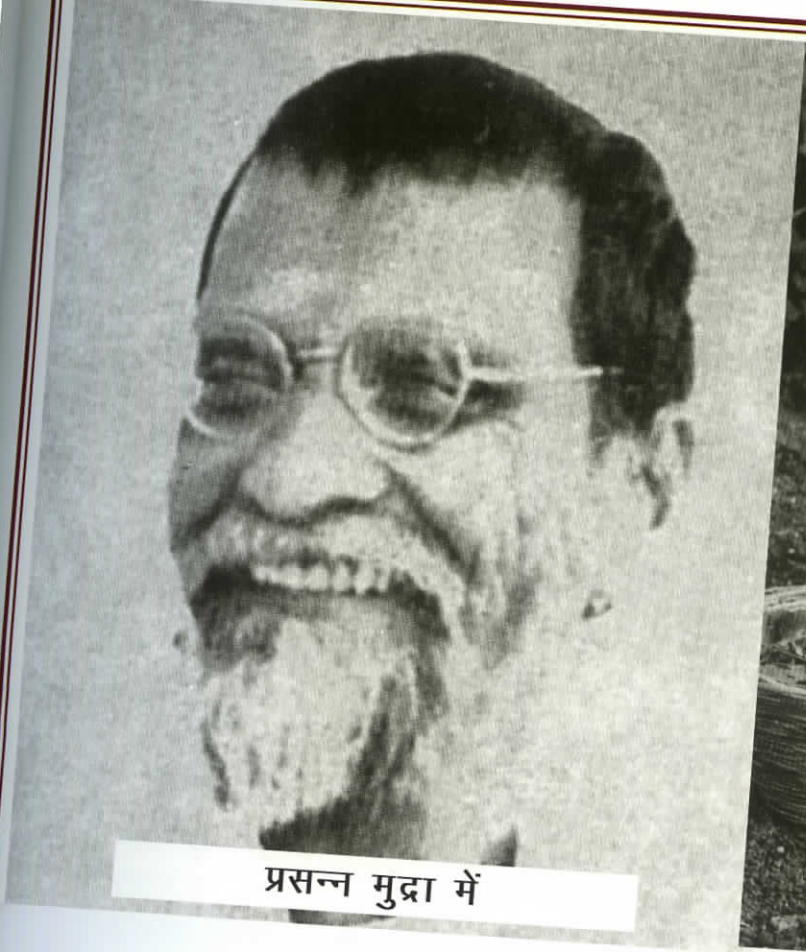

प्रसन्न मुद्रा में

खेत में काम करते हुए

विनोबा जी के गाँव का एक दृश्य

केन्द्रीय आचार्यकुल–एक नज़र में

– डा. देवराज त्यागी, सचिव

आचार्यकुल संत विनोबा भावे द्वारा स्थापित विचारकों का परिवार है। इसकी स्थापना 08 मार्च 1968 को हुई। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि सम्पूर्ण मानव जाति का तथा सृष्टि के हित का व्यापक चिन्तन करने वाले अनेक व्यक्ति समाज में है। थोड़ा प्रयत्न या आत्मसंयम साधकर वे निष्पक्ष, निर्भय तथा निर्वैर हो सकते हैं। यदि निष्काम समाज सेवा की अभिलाषा हो तो हर व्यवसाय के व्यक्ति किसान, मजदूर, कारीगर, शिक्षक, प्राध्यापक, व्यापारी, वकील, वैद्य, साहित्यकार, पत्रकार, खिलाड़ी, कलाकार आदि सब आचार्य हैं। उनका एक परिवार बने, देश–दुनिया के सभी प्रश्नों पर तटस्थ, जनकल्याणमय चिंतन करके –

1. अपना सर्व सम्मत मत बनाये। (विचार)
2. उसे अपने आचरण द्वारा प्रमाणित करे। (आचार)
3. उसे समाज में फैलाए। (प्रचार)
4. समाज की श्रृद्वा को सात्विक बनाने के लिये सत्त जनता में जाए। (संचार)
5. नीति–निर्धारण के ऊपर अपने विचारों का प्रभाव बने, उसके लिये इस संगठन का चरित्र उत्तरोत्तर उन्नत करने का प्रयत्न होना चाहिये।

आचार्यकुल चंडीगढ़ (रजि.) के कार्य विवरण व संक्षिप्त गतिविधियां

आचार्यकुल चंडीगढ़ पूज्य संत विनोबा भावे और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों पर निर्भय, निर्वैर तथा निष्पक्ष भावना को ध्यान में रखते हुए हर वर्ष निम्नलिखित समारोह आयोजित करता है :–

1. **विनोबा भावे जयंती समारोह** :– 11 सितम्बर को पूज्य संत आचार्य विनोबा भावे का जन्मदिन बड़ी श्रृद्धापूर्व मनाया जाता है। समारोह में सामूहिक चर्खा कताई, भजन एवं सत्संग–व्याख्यान आदि का कार्यक्रम होता है।

2. **गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती समारोह** :– 2 अक्टूबर को संयुक्त रूप से राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्मदिन मनाया जाता है। गांधी भवन सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़ में 'अहिंसा दिवस' के रूप में कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस समारोह में गांधी विचारों को अपनाने पर बल दिया जाता है क्योंकि विश्व में शान्ति एवं सद्भावना लाने का एकमात्र तरीका गांधी जी के विचार ही है। लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन पर भाषण का आयोजन एवं भजन गायन किया जाता है।

3. **गांधी जी की पुण्यतिथि** :– 30 जनवरी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रृद्धान्जलि दी जाती है। कार्यक्रम में सर्वधर्म प्रार्थना, भजन एवं गांधी जी के विचारों को आज के परिपेक्ष्य में देखने तथा उन पर अमल करने के बारे में चर्चा की जाती है।

4. **राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि** :– 22 फरवरी को श्रृद्धापूर्वक मनाई जाती है। 'बा' ने भी गांधी जी के साथ खादी को जीवन में विशेष स्थान दिया इसलिए उनकी पुण्यतिथि को खादी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

5. **शहीदी दिवस** :– 23 मार्च को हर वर्ष आचार्यकुल की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। जहॉ भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू द्वारा दी गई कुर्बानी को याद किया जाता है। बच्चों द्वारा कई कार्यक्रम किए जाते हैं ताकि भावी पीढ़ी देश के लिए जान देने वालों को याद रखे।

6. **महिला दिवस** :– 8 मार्च को आचार्यकुल चंडीगढ़ महिलाओं को समाज में समानता का दर्जा देते हुए महिला दिवस मनाता है। इस समय पर महिलाओं के अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक किया जाता है।

7. **पुस्तक विमोचन** :– उभरते हुए लेखकों को मंच देने के लिए आचार्यकुल सदा अग्रसर रहता है। कईं लेखकों की पुस्तकों का प्रकाशन करवाया गया और विमोचन गांधी स्मारक भवन, सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़ में किया गया।

8. **पौधारोपण** :– आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से हर वर्ष अलग–अलग जगह विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए जाते हैं।

9. **जरूरतमंदों की मदद** :– आचार्यकुल चंडीगढ़ की ओर से समय–समय पर जरूरतमंद बच्चों की सहायता पुस्तकें, स्कूल की वर्दी, जूते, स्कूल बैग एवं आर्थिक मदद देकर की जाती है। इसके अलावा सिलाई मशीन गर्म कपड़े आदि भी बांटे जाते हैं।

10. **साहित्यकारों का सम्मान** :– आचार्यकुल चंडीगढ़ समय–समय पर उभरते हुए साहित्यकारों एवं स्थापित साहित्यकारों का सम्मान कर साहित्य को सम्मानित करता है और लेखकों को प्रोत्साहित करता है।

11. **काव्य गोष्ठी** :– विभिन्न समारोहों व कार्यक्रमों के आयोजन में काव्य गोष्ठी का आयोजन कर आचार्यकुल कवियों को पहचान देने का कार्य करता है।

12. **भ्रष्टाचार के विरोध में आचार्यकुल चंडीगढ़** :– आचार्यकुल चंडीगढ़ सदा गांधी जी एवं विनोबा जी की दिखाई सत्य की राह पर चलता है और सामाजिक कुरीतियों का विरोध करता है। देश में अन्ना हज़ारे जी द्वारा चलाई गई लहर 'भ्रष्टाचार का विरोध' में आचार्यकुल चंडीगढ़ ने भी उनका समर्थन किया।

13. संत विनोबा भावे द्वारा लिखित आध्यात्मिक पुस्तक 'गीता प्रवचन' को अनेक लोगों में बांटा गया।

14. चंडीगढ़ लीगल सर्विस अथोरिटी के द्वारा चलाई जा रही लोक अदालतों में संस्था के अध्यक्ष ने भाग लिया। वहॉ पर अन्य न्यायाधीशों के साथ मिलकर अनेक मुकदमों का निपटारा कराया गया।

15. तीन वर्ष निःशुल्क चैरिटेबल होम्योपैथी डिस्पैन्सरी चलाई गई जिसमें अनेक मरीजों ने लाभ उठाया।

16. कालोनियों में रहने वाले गरीब लोगों को समाज कल्याण विभाग चंडीगढ़ द्वारा वृद्धा एवं विधवा पैन्शन के 200 फार्म भरवाये गए जिनमें से 125 लोगों को इस स्कीम द्वारा सहायता मिल रही है।

17. पांच छात्रों को संस्था की ओर से प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग के डिप्लोमा करवाये गए।

आचार्यकुल चंडीगढ़ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ तस्वीरों के माध्यम से

विनोबा भावे जी की जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्यकुल के अध्यक्ष के.के. शारदा

आचार्यकुल चंडीगढ़ द्वारा आयोजित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी के जयंती समारोह में स्कूल के बच्चे भजन गायन करते हुए

आजादी के परवाने शहीद–ए–आज़म भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धान्जलि देते हुए स्कूल के बच्चे

मुम्बई बम ब्लास्ट में शहीद हुए
लोगों की स्मृति में
हर्बल प्लांटस लगाते हुए
आचार्यकुल चण्डीगढ़ के सदस्य

महिला जागरूकता दिवस पर
महिलाओं को जागरूक करने के लिए
लगाया गया शिविर

साहित्यिक गतिविधियों के अन्तर्गत
आचार्यकुल चण्डीगढ़ द्वारा
समय–समय पर किये गये कार्यक्रम

साहित्यकारों का सम्मान

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं
लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती पर
पूर्व उड्डयन मंत्री श्री हरमोहन धवन
चरखे पर कताई करते हुए

स्वः डा. गोपीचन्द भार्गव,
प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी एवं
संयुक्त पंजाब के मुख्य मंत्री
की पुण्यतिथि के अवसर पर

लाला लाजपत राय के
बलिदान दिवस के
अवसर पर
पंजाब हरियाणा व
चण्डीगढ़ के साहित्यकार

DAILYPOST > CHANDIGARH, MONDAY 24 MARCH 2014

Successors of Chandigarh Freedom Fighters Association Acharya Kul organised a function at the Gandhi Samarak Bhavan to pay tributes to Shaheed Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru on Martyrdom Day on Sunday. Justice Suryakant (C) was the chief guest while Satya Gopal, Chairman of Housing Board, was a special guest on the occasion. SANJAY GHILDIYAL

अमर उजाला
चंडीगढ़, 30 मई 2011

'हक के लिए अब उठानी होगी आवाज'

अमर उजाला ब्यूरो

चंडीगढ़। महिला सशक्तिकरण पर रविवार को चंडीगढ़ आचार्यकुल ट्रस्ट की ओर से सेक्टर-16 स्थित गांधी स्मारक भवन में गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी स्मारक निधि के ट्रस्टी और सक्सेजर्स ऑफ फ्रीडम फाइटर के अध्यक्ष केके शारदा ने की। इसका संचालन उपाध्यक्ष डा. मीना शर्मा ने किया।

दर्शन शास्त्र विभाग और स्वामी विवेकानंद स्टडी सेंटर के विभाग अध्यक्ष सुधीर कुमार बावेजा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। संतोष गुप्ता ने महिला विधेयक पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़नी होगी। उन्हें भी अन्ना हजारे की तरह सशक्त कदम उठाने होंगे। 'वत्सल छाया' की उपाध्यक्ष संगीता वर्धन ने कहा कि महिलाओं के विकास के लिए ठोस नीतियों की कमी नहीं है, पर समाज में इन्हें क्रियात्मक रूप देने के लिए सामाजिक संगठनों को आगे आना चाहिए। पुनीता बावा ने कहा कि महिला और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। शक्ति के बिना शिव

महिलाओं के पिछड़ेपन के लिए ठोस नीति की कमी को जिम्मेदार ठहराया

अधूरे हैं और शिव के बिना शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। सामाजिक कार्यकर्ता निर्मला शर्मा ने कहा कि लड़कियों की दर में कमी आने के कारण बलात्कार जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। इस अवसर पर ट्रस्ट के सभी सदस्य प्रज्ञा शारदा, रमेश बत्त, कांशीराम, जेडी चीमा, डा. देवराज त्यागी भी उपस्थित थे।

आचार्यकुल चण्डीगढ़ की गतिविधियां : समाचार पत्रों के झरोखे से

दैनिक सवेरा टाइम्स
25 नवंबर 2014

'जान पे अपनी खेल के भी मां तेरा कर्ज चुकाएंगे'

शहीदी त्रैभाषिक कवि सम्मेलन का आयोजन

सम्मेलन के अवसर पर पंजाब, हरियाणा व चंडीगढ़ से पहुंचे बड़ी संख्या में साहित्यकार।

चंडीगढ़, 24 नवंबर (सवेरा): लोक सेवक मंडल व संवाद-साहित्य और पत्रकारिता मंच तथा आचार्य कुल चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में लाजपत राय भवन, सैक्टर-15 चंडीगढ़ के सभागार में शहीदी त्रैभाषिक कवि सम्मेलन का आयोजन लाला लाजपत राय के बलिदान दिवस के संदर्भ में हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि डा. के.के.रतु निदेशक दूरदर्शन केंद्र, अध्यक्ष के.के. शारदा अध्यक्ष स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी एसोसिएशन थे।

इस अवसर पर गांधी स्मारक भवन के निदेशक देवराज त्यागी व समाज सेवी ब्रिजेश भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. दलजीत कौर सैनी ने किया। कार्यक्रम में पंजाब, हरियाणा व चंडीगढ़ से बड़ी संख्या में साहित्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम के आरम्भ में लोक सेवक मंडल चंडीगढ़ के सचिव ओंकार चंद्र ने लाला लाजपत राय जी के जीवन व बलिदान पर प्रकाश डाला। कवि गोष्ठी के आरम्भ में वरिष्ठ कवि जय गोपाल अश्क ने पंजाबी में कविता पेश करते हुए कहा - लक्खां होए शहीद देश खातिर, आशिक जिन्दगी दे मौत तों नहीं डरदे। कविवर प्रेम विज ने हिन्दी गीत पेश करते हुए कहा - 'भगत-लाजपत राय के सपनों को साकार कर दिखलाएंगे। जान पे अपनी खेल के भी मां तेरा कर्ज चुकाएंगे। पंजाबी कविता में बलवीर तन्हा ने कहा - 'शहीदां दी कब्र नूं मैं ते रब्ब दा नाम दित्ता हां'। कविता के माध्यम से शशि प्रभा ने कहा -राजतंत्र जब हुआ स्वार्थी, फूट का विष फैल गया। उर्दू शायरी में चमन शर्मा चमन ने कहा - 'आओ कुर्बानी का अब दीपक जलाएं दोस्तो, द्वेष पे अपने नूं मर मिटना सिखाएं दोस्तो। उर्मिला कौशिक सखी ने कहा - इन्टरनैट ने सम्बन्ध ऐसे जोड़ दिए, रिश्तों ने अब घर से नाते तोड़ दिए। दलजीत सैनी ने कहा - शहीद हुए इस वतन पर जो, कब देश से कुछ मांगा था। इसके अलावा बाल कृष्ण गुप्त, परमजीत परम, राजेश पंकज, सेवी रायत, गुरदर्शन मावी, तरुणा, संतोष गर्ग, सरिंदर भोगल, मलकीयत बसरा, अमरजीत अमर, विजय कपूर, शंकरदास अग्नीश, सतनाम सिंह, पुनीता बावा, ललिता पुरी, बलवंत रावत, रश्मि खरबंदा, आर.पी. सिंह आदि ने रचनाएं प्रस्तुत कर वातावरण को राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत कर दिया। अध्यक्षीय भाषण में शारदा जी ने कहा कि लाला लाजपत राय ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डा. रतु ने कहा कि शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह है कि हम उनके द्वारा दिखाए मार्ग पर चलें।

पंजाब केसरी SATURDAY • 11.8.2012

'आकांक्षाओं के धरातल से' का बंसल ने किया विमोचन

चंडीगढ़, 10 अगस्त (जसप्रीत सिंह सिद्धू): लेखिका पुनीता बावा द्वारा लिखित पुस्तक 'आकांक्षाओं के धरातल से' का विमोचन गांधी स्मारक भवन चंडीगढ़ में आचार्यकुल ट्रस्ट के सौजन्य से पवन कुमार बंसल ने किया।

बंसल ने पुनीता बावा की बहुमुखी प्रतिभा एवं साहित्य जगत में उनके बढ़ते कदमों की सराहना की और शिक्षण व साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

आचार्यकुल ट्रस्ट की के अध्यक्ष के.के. शारदा ने भी पुनीता बावा के द्वितीय प्रयास की प्रशंसा की। इस अवसर पर बी.डी. कालिया हमदम, प्रेम विज, कैलाश आहलुवालिया ने भी पुस्तक के विषय में विचार रखे। प्राचीन कला केंद्र की रजिस्ट्रार शोभा कौसर ने भी पुनीता बावा के प्रति विशेष स्नेह जताया।

किताब का विमोचन करते पवन कुमार बंसल। (छाया)

दैनिक भास्कर

भागवत गीता जयंती पर बच्चों ने सुनाए श्लोक

चंडीगढ़। रविवार को देश-विदेश में गीता जयंती मनाई गई। इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। इसी उपलक्ष्य में गांधी स्मारक भवन सेक्टर 16 में चंडीगढ़ आचार्य कुल ट्रस्ट ने स्कूल के बच्चों के लिए एक श्लोकोच्चारण का आयोजन किया। इसमें मोतीराम आर्या स्कूल सेक्टर 27, संस्कृत गुरुकुल विद्यालय, इंडस्ट्रियल एरिया, सेक्रेड हार्ट स्कूल, मानव मंगल स्कूल, भवन विद्यालय और सिल्वर ओक स्कूल के लगभग 40 बच्चों ने गीता के श्लोक सुनाए।

सबसे पहले बच्चों ने मंच पर मोमबत्तियां जलाकर दिल्ली सामूहिक दुष्कर्म के प्रति रोष प्रकट किया। इसके बाद मोतीराम आर्या स्कूल की नौवीं की छात्रा विदुषी और 7वीं के छात्र अमित पांडे ने गीता के पहले अध्याय के श्लोक सुनाए। कार्यक्रम में आचार्य कुल ट्रस्ट के अध्यक्ष केके शारदा शामिल मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के आखिर में सभी बच्चों को स्मृति चिन्ह और सर्टिफिकेट दिए गए।

अमर उजाला
चंडीगढ़, 25 जुलाई 2011

मुंबई ब्लास्ट में मारे गए लोगों की याद में बनेगा हर्बल गार्डन

नीरज कुमार

चंडीगढ़। गांधी स्मारक भवन परिसर में मुंबई बम धमाकों में मारे गए लोगों की याद में हर्बल गार्डन बनाया जाएगा। आचार्य कुल ट्रस्ट और गांधी स्मारक भवन की ओर से यह निर्माण किया जाएगा।

13 जुलाई को मुंबई में तीन जगहों पर हुए बम विस्फोट में देश के लोग मारे गए थे। हर्बल गार्डन को तीन भागों में बांटा जाएगा और इन्हें झवेरी बाजार, आपेरा हाउस और दादर का नाम दिया जाएगा। मुंबई में इन तीनों स्थानों पर बम धमाके हुए थे। गांधी स्मारक भवन के निदेशक डॉ. देवराज त्यागी और आचार्यकुल ट्रस्ट के अध्यक्ष कृष्ण कुमार शारदा का कहना है कि ऐसे रचनात्मक कार्य करने से एकता मजबूत होगी और दुश्मनों के हौसले पस्त होंगे।

उन्होंने बताया कि अगले हफ्ते गार्डन बनाया जाएगा और इसकी क्यारियों में पौधे लगाए जाएंगे। इस कार्यक्रम में स्वतंत्रता सेनानी और शहीद परिवारों के सदस्य हिस्सा लेंगे और पौधे लगाएंगे। स्कूल के बच्चे भी इस कार्यक्रम में शामिल होंगे।

कृष्ण कुमार शारदा ने बताया कि झवेरी बाजार में अश्वगंधा, आपेरा हाउस में तुलसी और दादर में एलोवेरा के पौधे लगाए जाएंगे।

पंजाब केसरी
THURSDAY | 23 February 2012

कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि मनाई

चंडीगढ़, 22 फरवरी (अर्चना): आचार्यकुल ट्रस्ट की ओर से गांधी स्मारक भवन सैक्टर-16 चंडीगढ़ में कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई।

कार्यक्रम की शुरूआत कंचन त्यागी के भजन से हुई। डा. देवराज त्यागी ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए बताया कि कस्तूरबा गांधी बहुत व्यवहार कुशल थीं।

अफ्रीका में सत्याग्रह करते हुए वह जेल भी गईं। जब बापू ने चरखा अपनाया तो उन्होंने भी उसे अपना लिया। खादी में उनकी निष्ठा इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने अन्य कपड़ों का प्रयोग बिल्कुल ही बंद कर दिया था।

डा. मीना शर्मा ने उन्हें महिला सशक्तिकरण से जोड़ते हुए कहा कि वह बड़ी निर्भीक महिला थीं। के.के. शारदा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमें कस्तूरबा के गुण जीवन को अपनाना चाहिए।

अमर उजाला
चंडीगढ़, 12 सितंबर 2012

विनोबा भावे को याद किया

अमर उजाला ब्यूरो

संत विनोबा जयंती के अवसर पर आयोजित सेमिनार में भाग लेते लोग।

चंडीगढ़। आचार्यकुल ट्रस्ट की ओर से मंगलवार को प्रोफेसर [illegible] नंदा की अध्यक्षता में संत विनोबा भावे की 118वीं जयंती मनाई गई। सेक्टर-16 के गांधी स्मारक भवन में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समारोह में इतिहासकार डा. [illegible] जुनेजा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जुनेजा ने कहा कि विनोबा भावे गांधी जी के परम अनुयायी थे। पूरा जीवन इनके सत्य और अहिंसा पर चलते रहे। आचार्य कुल ट्रस्ट के अध्यक्ष केके शारदा ने कहा कि विनोबा जी ने अपने जीवन में छह आश्रमों की स्थापना देश के अलग अलग क्षेत्रों में की। गांधी स्मारक भवन के संचालक और ट्रस्ट के सचिव डा. देवराज त्यागी ने कहा कि विनोबा भावे कहते थे कि यदि विज्ञान और आत्मज्ञान का जोड़ा मिल जाए तो यह दोनों इस पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं। मां [illegible], डा. [illegible], मुकेश शर्मा [illegible] खादी आश्रम पानीपत, ने भी अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर रमेश बत्त, कांशी राम, [illegible], कंचन त्यागी, [illegible], रीना [illegible], मेजर सिंह ने भाग लिया।

राष्ट्रवादी दैनिक 26·2·15
उत्तम हिन्दू

राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी की 71वीं जयंती मनाई

चंडीगढ़/प्रेम विज

गांधी स्मारक निधि पंजाब हरियाणा व हि. प्र एवं आचार्यकुल चंडीगढ़ के सहयोग से गांधी स्मारक भवन में आज दिनांक 22-02-2015 को राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी की 71वीं पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती गुरप्रीत रावत, डिप्टी मेयर एवं पार्षद, चंडीगढ़ थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. ज्योति खन्ना, प्रधानाचार्य, देव समाज कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सैक्टर 36, चंडीगढ़ ने की। मुख्य अतिथि श्रीमती गुरप्रीत रावत, डिप्टी मेयर एवं पार्षद, चंडीगढ़ ने राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी को पुष्प भेंट करते हुए बताया कि माता कस्तूरबा गांधी सादगी से रहती थी। बापू के साथ यात्रा में कई लोग होते थे बापू ने सभी को [illegible] दे रखी थी कि सब लोग कम से कम सामान लेकर चलें। बा का बिस्तर सबसे छोटा तथा व्यवस्थित होता था।

श्री के. के. शारदा ट्रस्टी, गांधी स्मारक निधि एवं अध्यक्ष आचार्यकुल चंडीगढ़ व [illegible] ऑफ फ्रीडम फाइटर एसोसिएशन ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि खादी पहनने का उन्होंने आजीवन व्रत ले रखा था। एक दिन एक दिन बा की पैर की अंगुली में चोट के कारण खून निकल रहा था। बा खादी की पट्टी बांधने जा रही थी इतने में एक बहन ने महीन कपड़े की पट्टी ला दी और कहा, "इस महीन कपड़े से रगड़ नहीं लगेगी और पट्टी अच्छी तरह बंधेगी" परन्तु "मुझे तो खादी की पट्टी ही चाहिये। वह खुरदरी भी होगी तो मुझे नहीं चुभेगी।" कह कर बा ने खादी की ही पट्टी बांधी।

श्री देवराज त्यागी ने मंच का संचालन करते हुये बताया कि बापू का सारा जीवन साधनामय था जिसमें बा का सदैव साथ रहा। बापू के ऐतिहासिक कार्य में बा का जो हिस्सा रहा उसका स्मरण भारत सदैव करता रहेगा। वे भारत की जनता की माता थी। माता की तरह ही सब भारतीयों की चिंता करती थी। सत्याग्रह आन्दोलन में हिस्सा लेना, जेल जाना, महिलाओं को जाग्रत करना, आश्रम में व्यवस्था करना आदि उनके सभी कार्यों के पीछे मातृत्व की ही प्रेरणा थी। डा. ज्योति खन्ना, प्रधानाचार्या, देव समाज कॉलेज, सैक्टर 36, चंडीगढ़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बताया कि गांधी जी ने कहा था कि यदि मुझे कभी भी अपने जीवन साथी का चुनाव करना पड़े तो मैं कस्तूरबा को ही चुनूंगा। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि जन्म-जन्म [illegible] कस्तूरबा ही मेरी पत्नी रहे। बापू का यह कथन बा की महिमा को बताता है।

इस अवसर पर संवाद साहित्य एवं पत्रकारिता मंच की ओर से महिला कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें रोपड़, पटियाला व चंडीगढ़ की कवयित्रियों ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्वधर्म प्रार्थना एवं भजन से हुआ। कार्यक्रम में गुरपाल सिंह, कांशी राम, रमेश बत्त, मुकेश शर्मा, कंचन त्यागी, रीना परवीन, [illegible], खादी कार्यकर्ता एवं गांधी स्मारक भवन के अन्य कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

दैनिक जागरण चंडीगढ़, 17 नवंबर 2013

नारी मन की छटपटाहट 'नील जल की सोन मछलियां'

कवयित्री पुनीता बावा के तीसरे हिंदी काव्य संग्रह "नील जल की सोन मछलियां" को लोकार्पण करते हुए सांसद पवन कुमार बंसल। साथ में साहित्यकार भी दिखाई दे रहे हैं।

लोकार्पण
- गांधी स्मारक भवन में पुनीता बावा के काव्य संग्रह का विमोचन

जागरण संवाददाता, चंडीगढ़ : कवयित्री पुनीता बावा का तीसरा हिंदी काव्य संग्रह "नील जल की सोन मछलियां" [illegible]

The Tribune
24 MARCH 2014

Sons of soil remembered

TRIBUNE NEWS SERVICE

CHANDIGARH, MARCH 23

On the occasion of martyr day of the freedom fighters Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdevs, the Gandhi Samark Nidhi Punjab, Haryana and Himachal Pradesh paid homage to the martyrs with floral tributes and patriotic song renditions here today.

Justice Suryakant was the chief guest at the event while Satyagopal (IAS) chairman, Housing Board, was the guest of honour.

The young participants elevated the atmosphere of Gandhi Samark Bhawan with their patriotic compositions.

Mahesh Dutt, convener of the event, in his address said, "Politicians should rise above petty politics and not divide the country on the basis of religion and region. Freedom fighters laid down their lives for independent India and there should be no inequality and justice should be delivered to all. The youth shoul take insipiration from the martyr who laid their lives for the nation."

Justice Suryakant while addressing the gathering said, "The freedom fighters sacrificed their lives for our freedom, we must not ever forget their sacrifice and we must play our role as responsible citizens and contribute in our country's development and progress." The event ended with the audiences and organisers chanting national slogans.

आज समाज
शुक्रवार, 3 अक्टूबर 2014

शिद्दत से याद किए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

- मनाई गई गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जयंती

आज समाज नेटवर्क

चंडीगढ़। गांधी जयंती के अवसर पर गांधी स्मारक निधि पंजाब, हरियाणा व हि.प्र. की ओर से गांधी स्मारक भवन सेक्टर-16 चंडीगढ़ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती समारोह को बड़े श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व [illegible] केन्द्रीय मंत्री [illegible] भवन, भारत सरकार व विशिष्ट अतिथि डायरेक्टर [illegible] मिशन एवं चंडीगढ़ प्रशासन [illegible] सेक्रेटरी [illegible] उपस्थित रहे। [illegible] में खादी के कार्यकर्ताओं के अलावा देव समाज एजुकेशन कॉलेज की छात्राओं ने भी केके शारदा, ट्रस्टी गांधी स्मारक निधि पंजाब हरियाणा व हि.प्र. व अध्यक्ष खादी सेवा संघ एवं सक्सेसर ऑफ फ्रीडम फाइटर एसोसिएशन की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। शारदा ने सभा समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। महात्मा गांधी समेत समस्त स्वतन्त्रता सेनानियों को याद किया। डॉ. ज्योति खन्ना, प्रधानाचार्य देव समाज कॉलेज, रामनाथ, अध्यक्ष पंजाब खादी मंडल ने समारोह में भाग लिया।

अमर उजाला
चंडीगढ़, 22 अगस्त 2011

अन्ना हजारे के समर्थन में अनशन

चंडीगढ़। आचार्य कुल ट्रस्ट के सदस्यों ने सेक्टर-16 स्थित गांधी स्मारक भवन में रविवार सुबह 10.00 बजे से अन्ना हजारे के समर्थन में अनशन किया। इसमें काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। आचार्य कुल ट्रस्ट के अध्यक्ष केके शारदा ने कहा कि भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए ट्रस्ट पूरी तरह अन्ना के साथ है। वहीं, सचिव डॉ. देवराज त्यागी ने अन्ना हजारे के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

पंजाब केसरी • MONDAY • 6.5.2013

साहित्यकारों को किया सम्मानित

चंडीगढ़, 5 मई (भरत अग्रवाल): लाहौर में जन्में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी व गांधीवादी विचारक स्व. मानीष कुमार शारदा की चौथी पुण्यतिथि सैक्टर-10 गवर्नमैंट म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी आडीटोरियम में आचार्य कुल, सक्सैसर ऑफ फ्रीडम फाइटर एसोसिएशन एवं खादी सेवा संघ और गांधी स्मारक निधि के सहयोग से श्रद्धापूर्वक मनाई गई। आचार्य कुल के सचिव देवराज त्यागी ने बताया कि मानीष कुमार वर्ष 1938 में गांधी के विचारों से इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने अपनी नौकरी का त्याग कर स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपना जीवन व्यतीत किया। मानीष 3 साल 8 महीने से अधिक समय जेल में बंदी भी रहे। आजादी के पश्चात वह खादी से जुड़े रहे और वर्ष 1977 से 1978 तक पंजाब खादी बोर्ड में उच्च पद पर तैनात भी रहे। कार्यक्रम में रॉक गार्डन के रचियता पदमश्री नेक चंद मुख्यातिथि और खादी ग्राम उद्योग आयोग के अध्यक्ष देशराज गौतम विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान 31 स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों और 5 भूतपूर्व सैनिकों जिनमें ब्रिगेडियर केशव चंद रिटायर्ड, ब्रिगेडियर एस.सी. पाठक रिटायर्ड, कर्नल आर. कुमार रिटायर्ड, कर्नल शशिकांता रिटायर्ड व मेजर डी.एस. संधू रिटायर्ड शामिल है, को सम्मानित किया गया। इसके अलावा साहित्यकार बी.डी. कालिया, कैलाश आहलूवालिया, प्रेम विज तन्हा साहब, एम.एम. जुनेजा को भी सम्मानित किया गया।

फोटो: परमजीत

ਜਗ ਬਾਣੀ

IGARH, THURSDAY 3 OCTOBE

ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, (ਪੂਜਾ ਗੋਇਲ)-ਸੈਕਟਰ-16 ਸਥਿਤ ਗਾਂਧੀ ਸਮਾਰਕ ਭਵਨ ਵਿਚ ਗਾਂਧੀ ਜਯੰਤੀ ਤੇ ਭਾਰਤ ਰਤਨ ਲਾਲ ਬਹਾਦੁਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦੀ ਜਯੰਤੀ ਸ਼ਰਧਾਪੂਰਵਕ ਮਨਾਈ ਗਈ। ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਦੇ ਰੂਪ ਵਜੋਂ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਤੋਂ ਸੰਸਦ ਮੈਂਬਰ ਪਵਨ ਕੁਮਾਰ ਬਾਂਸਲ ਪਹੁੰਚੇ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਣ ਵਿਚ ਰਾਸ਼ਟਰਪਿਤਾ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਨੂੰ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਤੇ ਰਾਜਨੇਤਾ ਦੱਸਿਆ। ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀਆਂ ਬੇੜੀਆਂ ਤੋਂ ਆਜ਼ਾਦ ਕਰਵਾਉਣ ਵਾਲੇ ਅਹਿਮ ਯੋਗਦਾਨ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਰਾਸ਼ਟਰਪਿਤਾ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਤੇ ਜੈ ਜਵਾਨ, ਜੈ ਕਿਸਾਨ ਦਾ ਨਾਅਰਾ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਭਾਰਤ ਰਤਨ ਲਾਲ ਬਹਾਦੁਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਜੀ ਦੀ ਜਯੰਤੀ 'ਤੇ ਬੁੱਧਵਾਰ ਨੂੰ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਸਥਿਤ ਗਾਂਧੀ ਸਮਾਰਕ ਭਵਨ ਵਿਚ ਇਕ ਭਾਵਪੂਰਨ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਨੰਨ੍ਹੇ-ਮੁੰਨੇ ਬੱਚੇ ਹੋਣ ਜਾਂ ਫਿਰ ਬਜ਼ੁਰਗ ਸਾਰਿਆਂ ਨੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਵਧ-ਚੜ੍ਹ ਕੇ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ।

Bapu remembered THE TRIBUNE, CHANDIGARH, WEDNESDAY, OCTOBER 3, 2012

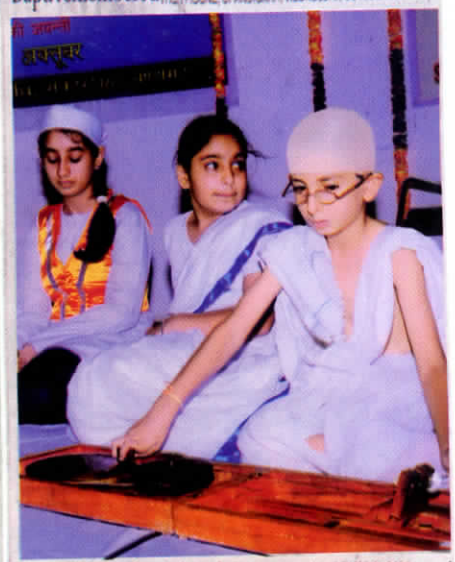

आज समाज

भूकंप से मारे गए लोगों को दी श्रद्धांजलि

अमर उजाला

स्वतंत्रता सेनानी की याद में छलके आंसू

शारदा जी की पुण्यतिथि मनाई, उमड़ी भीड़

दैनिक भास्कर

पुण्यतिथि पर याद आए गांधीवादी मनीष कुमार

दैनिक सवेरा | चंडीगढ़, सोमवार, 4 मई 2015

नेपाल त्रासदी के पीड़ितों को दी श्रद्धांजलि

सत्य स्वदेश

07 अक्तूबर 2013, सोमवार, पठानकोट

हमदम की पुस्तक का लोकार्पण

चंडीगढ़ : उर्दू के प्रसिद्ध शायर बी. डी. कालिया हमदम की नयी पुस्तक 'आबशाद-ए-अदब' का लोकार्पण चंडीगढ़ के सेक्टर 16 स्थित गांधी भवन में आयोजित समारोह में किया गया। श्री हमदम के साथ वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी समीर माथुर, पूर्व राज्यपाल बी. के. एन. छिब्बर ने लोकार्पण किया। बलवीर तन्हा व अन्य रचनाकारों ने पुस्तक पर आलेख प्रस्तुत किए और हमदम की शैली व साहित्य साधना को सराहा। कार्यक्रम में डॉ. इंदु बाली, कमलेश भारतीय, डॉ. मुक्ता, प्रेम विज, पुनीता बावा, सुशील हसरत नरेलवी, उर्मिल सखी, अमरजीत अमर व अन्य अनेक रचनाकार मौजूद थे। श्री हमदम ने अपनी साहित्यिक यात्रा के अनुभव सांझे किए।

4.5.15

अमर उजाला

गांधी स्मारक भवन में शोकसभा

आचार्यकुल चंडीगढ़ के संस्थापक संरक्षक पं. मोहन लाल

स्वर्गीय पं. मोहन लाल

पं. मोहन लाल स्वतंत्रता सेनानी, प्रसिद्ध शिक्षाविद, समाज सुधारक और राजनैतिक नेता थे। आपका जन्म सन् 1905 में फतेहगढ़ चूड़िया, जिला गुरदासपुर, पंजाब में हुआ। सन् 1929 से लेकर 1956 तक आपने बटाला में वकालत की। सन् 1952 में आप पहली बार संयुक्त पंजाब विधान सभा के लिए चुने गए और वित्त एवं उद्योग मंत्री बने। मंत्री रहते हुए आपने शिक्षा, खाद्य एवं आपूर्ति, संसदीय मामले आवकारी और स्थानीय निकाय विभागों में उल्लेखनीय कार्य किए। आप 1962 और 1967 में फिर विधान सभा के लिए चुने गए। आपने अनेक मुख्यमंत्रियों जैसे स. प्रताप सिंह कैरो, ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर आदि के साथ काम किया। जैसे पं. मोहन लाल जी कई वर्षों तक सनातन धर्म के प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष रहे। आप पंजाब विश्वविद्यालय के सेनिटर भी रहे। आप महामना मदन मोहन मालवीय और गोस्वामी गणेशदत्त जी के अनुयायी रहे। आपने चंडीगढ़ मे एस. डी. कॉलेज की स्थापना की। इसके अतिरिक्त एस. डी. स्कूल भी शहर में कार्यरत है। पं. जी ने फतेहगढ़ चूड़िया, जिला गुरदासपुर में भी लड़कियों का कॉलेज स्थापित किया। आप पंजाब खादी बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे। अध्यक्ष रहते हुए आपने खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए भरसक प्रयास किया और अनेक बेरोजगारों को रोजगार प्रदान किया।

गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी ने पंडित जी को शिक्षा के क्षेत्र में दिए अद्वित्य योगदान के लिए डॉक्टर की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज सोसाइटी ने पंडित जी की याद में बनूड़ (पंजाब) में एक नया कॉलेज खोलने की योजना बनाई है।

आचार्यकुल चंडीगढ़ के आप संरक्षक रहे और आचार्यकुल की गतिविधियों में सहयोग दिया।

उपकार कृष्ण शर्मा
जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज सोसाइटी
चण्डीगढ़

आचार्यकुल चण्डीगढ़ के संस्थापक अध्यक्ष
डा. मानीष कुमार शारदा

स्वर्गीय
डा. मानीष कुमार शारदा

डा. मानीष कुमार शारदा का जन्म सन 1914 में (लाहौर) पाकिस्तान में हुआ। उन्होंने एम.ए. इकोनोमिक्स तक शिक्षा प्राप्त की तथा पंजाब नैशनल बैंक दिल्ली में अकाउंटैंट के रूप में कार्यरत रहे।

वे अपने जीवन में महात्मा गांधी व आचार्य विनोबा से बहुत प्रभावित रहे तथा उन्होंने भी गांधी व विनोबा की भांति अपना जीवन देश सेवा को समर्पित कर दिया।

सन 1997 में चंडीगढ़ में उन्होंने आचार्यकुल की स्थापना की और आजीवन समाज सेवा में लगे रहे।

सितम्बर 1942 में ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' के दौरान वे जालंधर, सरगोधा तथा मीयांवाली जेल गए। 1939 से खादी से जुड़ गए। सारा जीवन खादी को अपनाया तथा खादी को प्रतिष्ठा प्रदान की तथा अंत तक खादी संस्थाओं से जुड़े रहे। वे हमेशा स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते रहे। उनका मानना था कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बढ़ता मायाजाल भारत को एक अलग तरह की गुलामी की ओर ले जा रहा है।

उनकी दिनचर्या में सबसे पहला कार्य चरखा कताई का रहता। वे समय के बहुत पाबंद थे। वे अपना सारा काम घड़ी देखकर करते। अपने कपड़े धोना, सिलाई करना, अपने कमरे की सफाई, खाना पकाना आदि सभी कार्य वे स्वयं करते। सीखने–सिखाने का शौक उन्हें जीवन में अंत तक रहा। 82 वर्ष की आयु में उन्होंने कार चलाना व कम्प्यूटर सीखा। वे हर समय कुछ न कुछ पढ़ते रहते। उन्हें शब्दों के अर्थों का इतना ज्ञान था कि उन्हें अपने आप में एक शब्दकोष कहा जा सकता था। वे मूर्ति पूजा को नहीं मानते थे। गीता पाठ करते तथा कर्म को ही श्रेष्ठ मानते थे। हमेशा ओंम् नाम का सिमरण करते। एक साक्षात्कार में उन्होंने समाज में फैली सबसे बड़ी बुराई 'भ्रष्टाचार' को बताया। इससे देश के विकास की गति धीमी पड़ गई है। उनके अनुसार इन्द्रियों को आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए। वे स्वयं घंटों आँखें बंद करके बैठते तथा मौन व्रत रखते। जात–पात, स्त्री पर्दा प्रथा तथा दहेज जैसी कुरीतियों के विरूद्ध थे।

लम्बी बीमारी के पश्चात 28 अप्रैल 2009 में वे इस संसार को छोड़ कर चले गए।

पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल जनरल एस.एफ. रोड्रिक्स, डा. मानीष कुमार शारदा के साथ बातचीत करते हुए

आचार्यकुल चण्डीगढ़ आयोजक समिति के सदस्य जिन्होंने समारोह के आयोजन व स्मारिका प्रकाशन में अपना योगदान दिया

के.के.शारदा, अध्यक्ष

प्रेम विज, वरिष्ठ उपाध्यक्ष

पुनीता बावा, उपाध्यक्ष

डा. देवराज त्यागी, सचिव

प्रज्ञा शारदा, सह सचिव

कांशी राम, कोषाध्यक्ष

कंचन त्यागी, सदस्य

डा. मीना शर्मा, सदस्य

पापिया चक्रवर्ती, सदस्य

संजय भारतीय, सदस्य

रमेश बल, सदस्य

डा. दलजीत कौर, सदस्य

गुरपाल सिंह, सदस्य

के.एल. चुग, सदस्य

जे.डी. चीमा, सदस्य

आचार्यकुल चण्डीगढ़ के सदस्यगण

गुरमीत कौर

तेजिन्दर सिंह

नीरज कौशिक

मंगला कौशिक

अश्वनी खन्ना

अशोक नारंग

ईश्वर अग्रवाल

बिन्दु सक्सेना

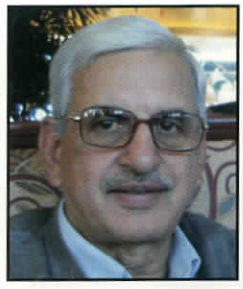
डा. एम.पी. डोगरा

विक्रम अरोड़ा

सुमन बेरी

आदर्श कुमार

चितवन शर्मा

डा. सुमन गक्खर

गुरमीत सिंह कालरा

सुषमा गर्ग

डा. डबल्यु.सी. गोयल

डा. गौरव गोयल

डा. आर.पी. भारद्वाज

रीना परवीन

विनय महाजन

- जगदीश तनेजा
- अशोक तनेजा
- जगत शर्मा
- विभा

- रमन गुप्ता
- ममता बंसल
- डा. पूनम कोहली
- डा. ए.के. कोहली
- दिलशाद अंसारी

उत्कृष्ट कार्य करने वालों का सम्मान

श्रीमती विमला मेहरा
स्वतंत्रता सेनानी परिवार से

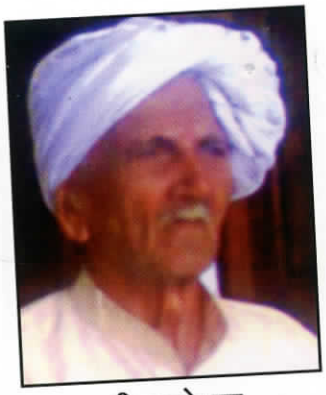

श्री भलेराम
स्वतंत्रता सेनानी

श्रीमती अमरजीत कौर
समाज सेविका

डा॰ यशपाल शर्मा
कार्डियोलाजी डिपार्टमेंट हैड (पी.जी.आई)

डा॰ पूजा गर्ग
प्राकृतिक चिकित्सक

श्री चरणजीत सिंह
रक्तदानी

श्री सिमर सदोष
वरिष्ठ साहित्यकार

श्रीमती रीतू कलसी
नवोदित साहित्यकार

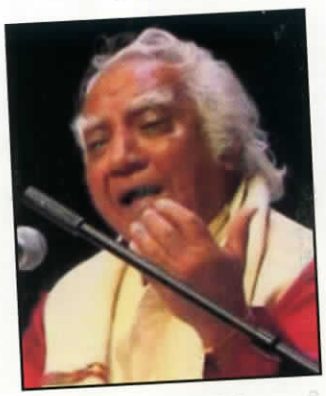

प॰ यशपाल
शास्त्रीय संगीतज्ञ

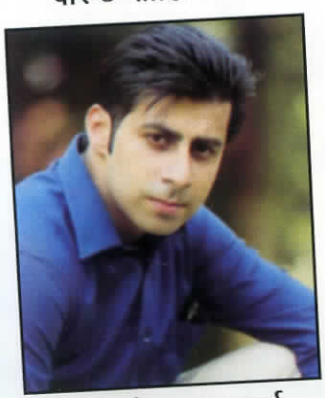

श्री सौरभ आचार्य
अभिनय जगत

कीर्ति होडा
कला जगत

डा॰ राजिन्दर कुमार
योग विशेषज्ञ

उत्कृष्ट कार्य करने वालों का सम्मान

श्रीमती नीता रानी
स्वच्छ भारत

श्री साधू सिंह
स्वच्छ भारत

श्री एस.एस. लाम्बा
समाज सेवा

गरिमा नरूला
विशेष विद्यार्थी

रितिक गोयल
विशेष विद्यार्थी

अमित साहनी
विशेष विद्यार्थी

श्री जसकरण सिंह सोही
खिलाड़ी

श्री बी.डी. शर्मा
कला व संस्कृति

श्री गुरपाल सिंह
खादी जगत

श्री सुखविन्दर शर्मा
फिल्म डायरेक्टर

विदूषी रावत
खेल जगत (स्केटिंग)

श्री राम नाथ
खादी जगत

Nail Spa™ by Gurpreet

NailPro™ The Way Forward!

Ms. Gurpreet Seble
International Educator
& Nail Expert

Nail Extension & Nail Art Setup Kits Available

₹ 6,995/- ₹ 14,995/- & up

+91 93 50 461 370
info@nailspaindia.com
www.nailspaindia.com

+91 99 100 722 11
sales@nailproindia.com
www.nailproindia.com

+91 88 26 700 222

■ **SERVICES** ■ **PRODUCTS** ■ **TRAINING** ■ **SETUP**

LOCATIONS ACROSS NEW DELHI/NCR & NATIONAL WIDE

[Gurgaon:-*Galleria DLF - IV: 9350392983, 0124 - 3251299] [Delhi:-*DLF Promenade Mall Vasant Kunj: 9310221926, 9310654935]
[Delhi:-*Karol Bagh: 9310654936, 011 - 25753370] [Pune:-*Koregaon Park: 8551924007, 020 - 41209113]
[Kolkata:-*Ballygunge Phari: 9007619000, 9311224006] [Mumbai:-*Colaba: 9920700909, 022 - 22180909] *T/C

Manufacturers of : Nature Cure Hydro Therapy, Ayurveda Panchakarma & Spa Equipments.

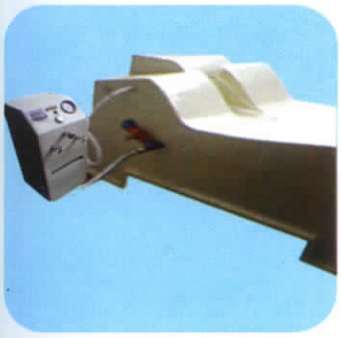
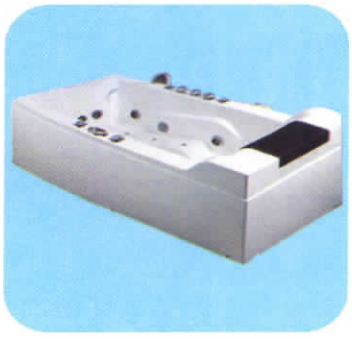
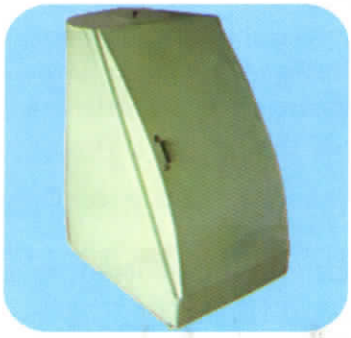

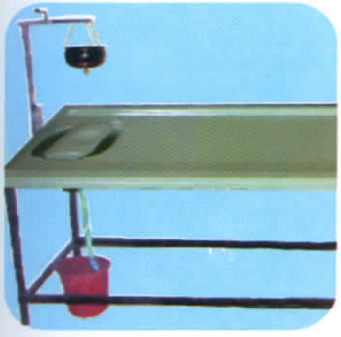

Sharma Enterprises
sharmafibre.com
Estd-1987

Sharma Enterprises

Quality Delivered

Factory : E-156-157, Sec.-2,
DSIDC, Bawana, Delhi-110039
E-mail : info@sharmafibre.com, sharmafibre@hotmail.com,
sharma_enterprises@outlook.com Website : www.sharmafibre.com

Office/Showroom : RZ-63, Street No. 26, Vashist Park,
Pankha Road, Opp. Petrol Pump, Near Janak Cinema,
New Delhi-110046
Tele / Fax : 011-28526405, Mob.: +91-9210053968, +91-986893175

GOBIND INTERNATIONAL PUBLIC SCHOOL

ABOUT US

GOBIND INTERNATIONAL PUBLIC SCHOOL, an English medium school, established by Gobind Educational Society, Bhadaur consists of highly devoted and dedicate individuals from the different walks of the life whose primary goal has been provide a good education.

GIPS is a union of with the vivid interests, with a common ultimate aim of fulfilling a noble task of spreading the light of literacy and enlightening the path of future.

The school is located in the outskirts of Bhadaur an industrial town of Punjab, which is almost three kms, from the city heart on National Highway No.71 going towards BARNALA.

The school has its own building Aesthetically sound, well ventilated, spacious classrooms, well equipped with state of the art facilities middle of the 8 acres of lush green surroundings.

Gobind International Public School is the only one school in this District with a modern infrastructure amidst of lush green surroundings, and an ISO : 9001-2008 certificate. For its wonderful infrastructure.

OUR MISSION

- To provide adequate infrastructure and a comfortable learning environment.
- To harness the power of technology to adopt innovative teaching methods.
- To enhance proficiency in spoken English and help in personality development.
- To associate with premier institutes of learning.
- To focus on an effective Quality Management System.
- To lay the foundation of a noble character of moral integrity, brotherhood, patriotism and sacrifice in the young minds so that they grow straight and strong as ideal leaders who can shape the destiny of the nation.

FACILITIES

- Smaller Student Teacher ratio for individualized attention.
- Adequate Sports facility .
- Day Boarding facility to all.
- State of the art music, dance, Art & Craft facilities
- Well stocked Library for students as well as teachers.
- Well equipped Computer Lab with internet connections.
- Well qualified and experienced teaching and administrative staff.
- Well maintained Hostel for Boys
- Smart Class Facility for Each Class
- C C T V camera coverage for all the classes and other rooms for the supervision
- Arrangements For national and International Tour

JAYSON JOSE (Principal)
GOBIND INTERNATIONAL PUBLIC SCHOOL, BHADAUR
CISCE Affiliated (PU094)
BARNALA ,PUNJAB 148102
email : gobindipsbdr@gmail.com,principalgips08@gmail.com
Phone: 01679 -275440, 08427404440
For More Details Kindly Visit:
www.gipsbhadaur.com

रोजगार ही रोजगार

गोनाईल बनाएं लाभ कमाएं

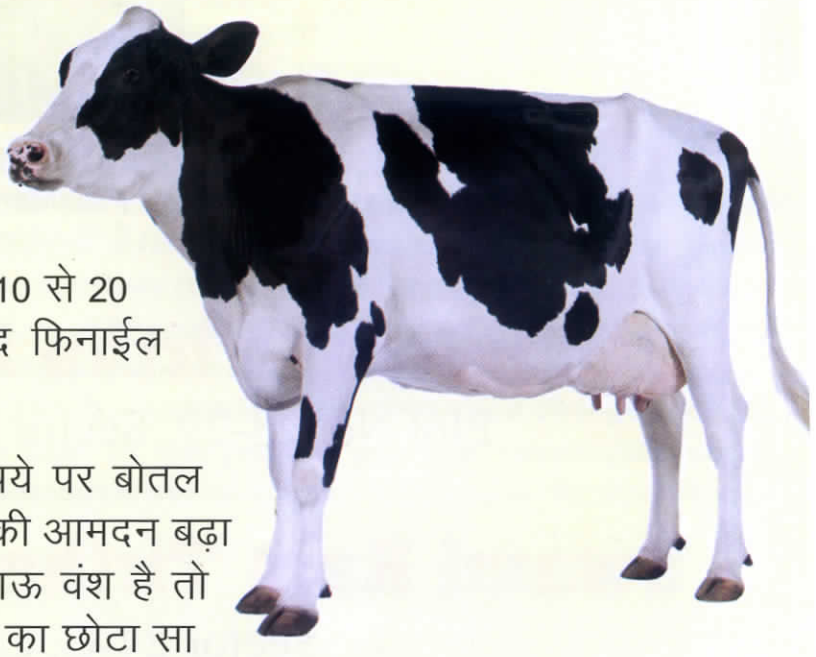

हमारी संस्था गऊ मूत्र द्वारा फिनाईल बनाने में आपकी सहायता कर सकती है। हमारे द्वारा बनाए सफेद फिनाईल के कंपाउंड में बराबर या दो गुणा गऊ मूत्र और 10 से 20 गुणा पानी मिलाकर आप बहुत अच्छी सफेद फिनाईल बना सकते हैं।

यह फिनाईल बाजार में 30 से 40 रुपये पर बोतल बिकती है और इस से आप अपनी गऊशाला की आमदन बढ़ा सकते हैं यदि आपके पास पर्याप्त मात्रा में गऊ वंश है तो आप अपनी गऊशाला में गऊ मूत्र अर्क बनाने का छोटा सा प्लांट लगाएं। यह गऊ मूत्र अर्क फिनाईल बनाने के काम भी आएगा व आप गौ मूत्र बेच भी सकते हैं। यह कंपाउंड देश की बहुत सारी संस्थाऐं सफेद फिनाईल बनाने के लिए इस्तेमाल करती हैं। इसके अलावा हम और भी कई पदार्थ गऊ मूत्र व गऊ गोबर से तैयार करते हैं। जैसे कि मच्छर कवायल व धूप आदि। इसके अतिरिक्त हम खादी ग्रामुद्योग कमीशन मुंबई द्वारा पंजीकृत हैं व हर प्रकार की खादी का भी उत्पादन करते हैं। हम घर में काम आने वाले प्रोडक्ट जैसे कि हैंडवाश, बर्तन धोने वाला (डिश वाश), नहाने का साबुन भी तैयार करते हैं और यह सभी प्रोडक्ट्स पूरे हर्बल और हानि रहित हैं।

इन्हें आप हम से लेकर बेचने पर आप अपनी आमदन बढ़ा सकते हैं। इस तरह आप अपनी गौशालाओं को आत्म निर्भर कर गऊ सेवा को सुचारू व उन्नत कर सकते हैं। यदि इस विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो आप हमारे नीचे लिखे नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकों सफेद फिनाईल के कंपाउंड का सैंपल चाहिए तो भी हम आपको भेज सकते हैं।

निर्माता :–

चेयरमैन : स. जोगिन्द्र सिंह
कंटियां ग्राम उद्योग समिति (रजि.)
बैकसाईड इंडस्ट्रियल एरिया, जालंधर रोड, होशियारपुर–146001 पंजाब
दूरभाषः 01882–250793 मोबाईलः 09356413822
Email : kantian_gram@yahoo.com
Website : www.kantiangram.com

Best Compliments From :

Rakesh Sharma
President
Swami Ram Tirtha Memorial Society

Swami Ram Tirtha Memorial Society

Plot No. 28-29, Sector 24-C, Chandigarh

Swami Ram Tirtha Cultural Centre

Sector 24-C, Chandigarh

Swami Ram Tirtha Smart School

Phase IV, S.A.S. Nagar (Mohali)

EURO Kids Mohali

सत्यमेव जयते

राज्य कार्यालय

STATE OFFICE

आयुक्त खादी और ग्रामोद्योग

KHADI AND VILLAGE INDUSTRIES COMMISSION

(सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यममंत्रालय, भारत सरकार)

(Ministry of MSME, Govt. of India)

एस.सी.ओ. - 3003-04, सैक्टर 22डी, चण्डीगढ़-160 022

S.C.O. - 3003-04, Sector 22D, Chandigarh - 160 022

Tel - 0172-2701261, Fax 0172-2702690,

e-mail-sokvic_chd@rediffmail.com

कामये दुःखतप्तानाम्।
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्॥

Khadi and Village Industries Commission (KVIC) is implementing Prime Minister Employment Generation Programme (PMEGP) through State/ Divisional Offices of KVIC, State/ Union Territories, KVI Boards and District Industries Centers (DIC), The objective of the scheme is ti provide employment opportunities by setting up of Micro Enterprises in rural and urban areas. Scheme details can be viewed on KVIC website, www.kvic.org.in.

Margin money/ subsidy ranging from 15% to 35% is available depending upon category of the beneficiary/ area of beneficiary. Maximum cost of the project per unit admissible under manufacturing is upto Rs 25.00 lacs and for business/ services sector it is upto Rs 10.00 lacs.

Applications are invited from

1. **Unemployed above the age of 18 years.**
2. **Self help Groups (SHGs)**
3. **Registered Institutions**
4. **Co-operative Societies**
5. **Trusts etc.**

Above individuals/ institutions may apply in the prescribed format which can be downloaded from websites, www.kvic.org.in and www.msmeweb.org or the same can be collected from local offices of KVIC, KVIB and DICs.

KVIC and KVIB will be operating the scheme only in rural areas whereas DIC will be operating the scheme in rural and urban areas.

All other terms and conditions can be seen or downloaded from the above referred websites.

"BUILD YOUR OWN DESTINY.
START YOUR OWN MICRO ENTERPRISES.
AVAIL PMEGP SCHEME"

Best Compliments From :

YT

M/s Yasmeen Textiles

Manufacturers. of :
High Class Handloom Cotton Duree, Tat Patti & Dari Patti etc.

Prashant Vihar, Raipur Rani, Distt. Panchkula (H.R.)
Mobile : 09896200276

Best Compliments From :

LION RAM BHARDWAJ

MJF 1 Diamond
Past District Governor

SAT PAL PANDIT & CO.

Property Dealers & Auctioneers

Milap Chowk, Jalandhar
Phone : 0181-24256941
(M) : 98148-13018

Best Compliments From :

BLUE BIRD HIGH SCHOOL

(AFFILIATED TO C.B.S.E., NEW DELHI)
SECTOR 16, PANCHKULA - 134 113 (HARYANA)
Phone: 0172-2567273, 2564822 Email : bluebirdschoolpkl@hotmail.com
Website : bluebirdschool.org

Best Compliments From :

Jatinder Pal Singh
Ph. : 0181-2210398
Mob. : 94174-66912

SETHI HANDLOOM

Mfrs. of Poly Hi Sheets Quilt & Bed Sheet

Deals in :
Cotton, Waste, Fibre, Handloom, Rajai, Matresses, Pillow & Other Goods

Bazar Bansa Wala, Near P.N.B. Bank, Jalandhar.
Mob. : 98883-43435

Best Compliments From :

Atro Devi Jain (Rewari Wale)

IX/2822, Street No. 18, Circular Road, Kailash Nagar, Delhi-110031

Best Compliments From :

राजू मॉडल स्टोर

द्वारा खादी सेवा संघ
घास मंडी, सुजानपुर
जिला–पठानकोट (पंजाब)

Best Compliments From :

राजकुमार जनरल स्टोर

द्वारा खादी सेवा संघ
घास मंडी, सुजानपुर जिला–पठानकोट (पंजाब)

Best Compliments From :

Best Compliments From :

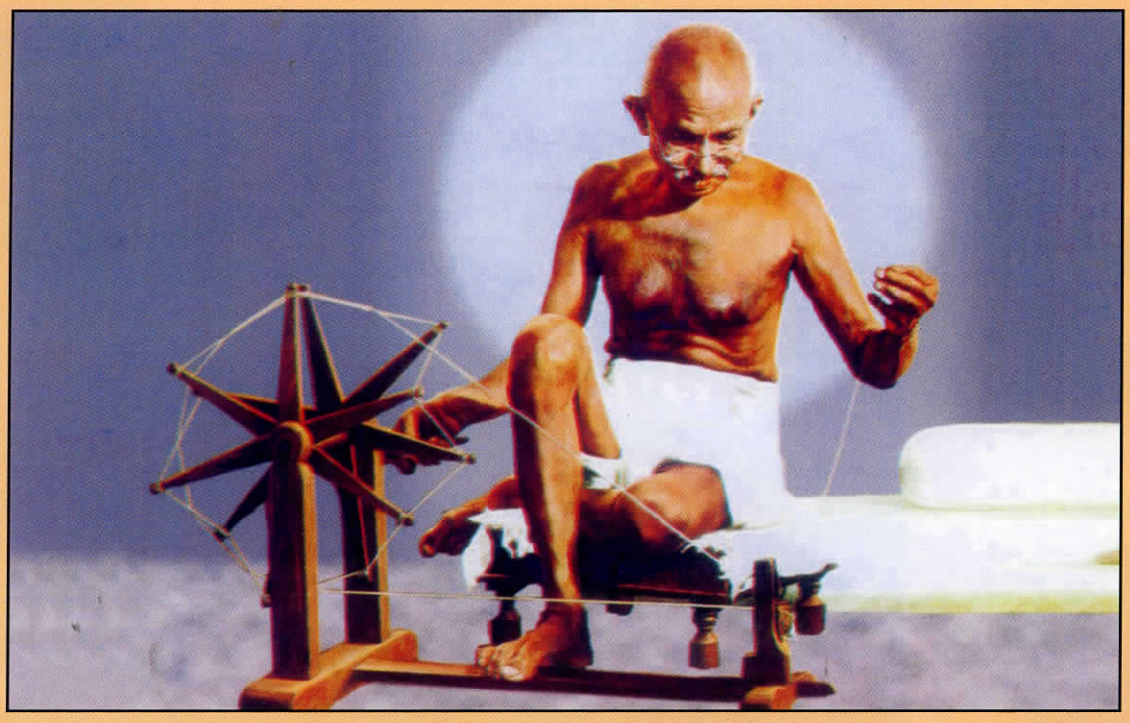

खादी सेवा संघ

(प्रमाणित खादी ग्रामोद्योग आयोग भारत सरकार)

खादी कोठी, नजदीक रेलवे माल गोदाम

जालंधर शहर, पंजाब

फोन : 0181–2642323, 6545348

मोबाइल : 9041469777, 9464336682

अध्यक्ष – के.के. शारदा

मंत्री – गुरपाल सिंह

Best Compliments From :

श्रेष्ठा ग्रामोद्योग समिति

द्वारा खादी सेवा संघ

खादी कोठी, नजदीक रेलवे माल गोदाम

जालंधर शहर, पंजाब

मोबाइल : 9464336682

फोन : 0181–6545348

Dev Samaj College of Education

Sector 36-B, Chandigarh

34 years of Academic Excellence

First college in North to be recognized by NCTE-Feb 1997
Re-Accredited with 'A' Grade by NAAC

Courses offered:

- B.Ed.
- M.Ed.
- Add-on course in Human Rights and Value Education
- Post Graduate Diploma in Guidance & Counselling
- Post Graduate Diploma in Guidance & Counselling

Special features:

- One Year Duration (Two semesters)
- 100 % placement of all the pass outs

Dr. (Mrs.) Jyoti Khanna
Principal
Phone: 0172-2603241
E-mail: info@devsamaj.org, devsamaj@rediffmail.com
Website: http://www.devsamaj.org/

Best Compliments From :

सतीश कुमार

नारंग मोटर्स

नजदीक खादी सेवा संघ
सेन्ट्रल टाउन, मिलाप रोड
जालंधर शहर

Tilak Chugh
9896215715

Bharat Bhushan Nanda
9215248600

SATGURU YARNS

(The Trading Peoples)

Shop No. 16 Ganga Garden Gangapuri Road,
Panipat 132103 (Haryana)
email id -satguruyarn@gmail.com

Best Compliments From :

94166-00555
Mob. : 94163-15950
94162-92643

卐 ॐ गणेशाय नमः 卐

गुरू गृह गए पढ़न रघुराई! अल्पकाल विद्या सब पाई!!

SARASWATI WELFARE SOCIETY

RISHI COLONY, SWASTIKA ROAD, PANIPAT-132103
Postal Address : Jagdish Taneja 220A, HUDA, Sector 11, PANIPAT

Vikarm Arora
+91-94160-33018

JAI SAI RAM TEXTILES

Manufacturers & Suppliers of :
All Type of Pillow, Cushion, Polyester Fibre Sheets
& Kinds of Fancy Bed Sheets, Comforter & Blanket Goods
Office & Godown : **UJHA ROAD, NEAR SAI BABA MANDIR, PANIPAT**

Enjoy

The power of liquidity in Fixed Deposit

INTRODUCING

Cent Aspire Deposit Scheme

Invest in a Fixed Deposit and get a Credit Card absolutely Free

Now get a Credit Card against your Fixed Deposit with Central Bank of India. Deposit amount: ₹ 20,000 & above.

FEATURES AND BENEFITS:

• No income document required • No CIBIL verification required • Credit limit up to 80% of FD amount
• Credit Card @ 1.2% interest per month, after free credit period of up to 55 days • Free personal accidental cover of ₹ 1 lakh

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Best Compliments From :

Tomorrow Never Arrives
Start working on your Dreams & Ambitions
TODAY
Come & Join
Sarthak Ayush & Herbal
(A division of Sarthak Group)
We invite Pharma franchisee or PCD based business with Monopoly rights
Enquiry for Third Party Manufacturing Solicited
We offers best quality products
Latest and innovative packaging
Diversified product portfolio
Competitive prices with good profit margins
Uninterrupted supply chain
Availability of quality promotional inputs
Join us as franchisee for marketing & distribution with monopoly rights
SARTHAK
198-A, Sector-3, HSIIDC, Karnal- 132001 (Haryana)
Ph: +91-184-2220227, Fax: +91-184-2221198,
Mob: +91-9996227000, +91-9215291007
sarthak@sarthakasia.com, www.sarthakasia.com

Growing **Demand**
Growing **Opportunity**

Govt University's Regular M.Sc. in

Clinical Research

Applications invited for limited seats in Clinical Research :
M.Sc. in Clinical Research, 1 Year Advanced Diploma & 6-months Diploma
Professional Courses
CDM, SAS & Pharmacovigilance courses are also available

"The indian clinical research market is set to cross $1 billion mark by 2016"
- Frost and Sullivan Report

Excellent opportunity for Graduates or Final Year students of any stream of Life Sciences, Medical or Para-Medical

- **To enter the High Growth field of Clinical Research**
- **To get an edge over other students during Campus Interviews**
  Students placed securing as high a Salary as Rs. 4.8 Lakh

UNIVERSITY RECOGNISED PROGRAMS
INDUSTRY BACKED

Awarded by
Punjab Technical University, Jalandhar

Advantage**Anovus**

- Supported by pharma industry and other Contract Research Organisations
- Teaching of advanced Clinical Research Software
- Only University awarded regular Two year modular programme leading to M.Sc. Clinical research
- Qualification acceptable globally
- Convenient weekend Batch
- Education Loan available from Credila

Anovus Associates | CREDILA AN HDFC LTD. COMPANY | SwAPP

CMA presented Anovus with Excellence Award for Technical Education

Two of our students have acquired additional qualifications in Clinical Research from **Harvard University**

Prepare for **YOUR future** with Anovus...Now!

For admission please ***Call***
093161 21000 . 098140 00720

Download Application Form and other details from
www.anovus.net

ANOVUS®
Institute of Clinical Research
ISO 9001 Certified

Plot 28-29, Opposite Batra Theatre, Dakshin Marg, Sector 24C,
Chandigarh 160 036 India
Phone : 0172-2726730 | Fax 0172-2726740 | info@anovus.net
www.anovus.net

Best Compliments From :

CIVIL FABRICATION & INTERIOR WORKS

SP

S.P. DEVELOPERS & DECORATORS

S.P. SINGH

Office :
3195, Paradise Enclave,
Sector 50-D, Chandigarh.
Ph.: 0172-2673195
Mob.: 9646031286
Email: spdeveloperschd@yahoo.in

Works:
Near Kumrahar Road Over Bridge,
Patna (Bihar).

SINCE 1951

ॐ

आजीवन स्वास्थ्य प्राप्ति के साधनों की सही जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तकों के मिलने का एकमात्र स्थान

P·B·D

पापुलर बुक डिपो

G-15, S.S.Tower, Dhamani Street, Chaura Rasta, JAIPUR-302 003 (Raj.)
Tele: 0141-2325965, 98290-89555, 98292-55156
email: pbdjpr@rediffmail.com • www.pbdbooks.com

स्वास्थ्यवर्धक पुस्तकों के एकमात्र प्रकाशक जिनकी 7 पुस्तकों को भारत सरकार, परिवार एवं स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्राप्त है।

उपलब्ध साहित्य:

प्राकृतिक चिकित्सा, योग एवं प्राणायाम, ध्यान, आयुर्वेदिक चिकित्सा, भोजन के द्वारा चिकित्सा, क्या खायें और क्यों, आहार चिकित्सा, शक्तिवर्द्धक भोजन, होम्योपैथिक एवं स्वदेशी चिकित्सा

एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर चिकित्सा, जड़ी–बूटी चिकित्सा, मसालों द्वारा चिकित्सा, सुजोक, रेकी, सूर्य रश्मि, चुम्बक, यूनानी चिकित्सा, वास्तुशास्त्र–पिरामिड, फेंगशुई आदि

घर का वैद्य (अपने घर बैठे इलाज करें), जैसे—ग्वारपाठा, गेहूँ के ज्वारे, अलसी, केला, मेवों द्वारा चिकित्सा, नीबू, शहद, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नीम, नमक, तुलसी, हींग–हल्दी, गाजर, मूली, टमाटर, लहसुन, प्याज आदि

महिला उपयोगी पुस्तकें— मेंहदी, कुकिंग, शरीर और सौन्दर्य, योग द्वारा सौन्दर्य स्त्री रोग व शिशु पालन, इनको भी आजमाइए (घरेलू नुस्खे), रूप निखार कमर–दर्द, कद बढ़ाइए, मोटापा घटाइए, गर्भावस्था, सैक्स की शिक्षाप्रद पुस्तकें

NDDY-Ist, IInd, IIIrd yr. BOOKS + SOLVED PAPERS

पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। विस्तृत सूची–पत्र मुफ्त मंगवाएँ

डिस्कवर हैल्थ — मासिक स्वास्थ्य पत्रिका त्रिवार्षिक शुल्क: 200/- आजीवन शुल्क: 500/-

बाबा रामदेव, CCRYN की VCD + ACD व अन्य Charts भी उपलब्ध हैं।

वी.पी.पी. डाक द्वारा पुस्तकें भेजने की व्यवस्था भी है।

शोरूम पर आपका स्वागत है, सेवा का अवसर अवश्य दें।

RED CARPET LAWNS

from moments to memories

83969-50005,92156-50005 ITI Kunjpura Road, Karnal 132 001

Best Compliments From :

T.S. THAKUR
M : 98140-46494

PHOTO IMPRESSION

Still Photography & Video Filming

**S.C.O. 1072-1073, Cabin No. 12, IInd Floor,
Sector 22-B, Chandigarh**

Best Compliments From :

O.P. GULATI
M : 98111101901

REALTOR

GULATI Realtors

REAL ESTATE

**H-15/1, Malviya Nagar, New Delhi - 110017
Tel. : 011-26689455
e-mail : gulatiomparkash@yahoo.co.in**

Best Compliments From :

बाल कृष्ण शर्मा जय किशन शर्मा कृष्ण कुमार शर्मा

दीपक ट्रेडिंग कम्पनी

शाहदरा, दिल्ली

Best Compliments From :

Raman Kumar Sharma
Advocate
Punjab Haryana High Court

#1459, Sector 22-B,
Chandigarh
M : 09316117236

Best Compliments From :

SUTLEJ KHADI MANDAL

(A category, Major Institution)

Khadi Certificate No. CC/PJB/2869 dt. 27-4-1970

Registration No. : 131 dt. 11-3-1970

NAKODAR, DISTT. JALANDHAR (PUNJAB)

Ph. : 01821-220022, 224422

Sh. Kashmiri Lal Chopra
Chairman

Sh. Ashok Kumar
Secretary

INSTITUTION MAIN PRODUCTS

Cotton Khadi :

Darri Gulchaman, Darri Gulnar, Darri Chitarkari,
Darri Tesri, Darri Sulpher, Darri Floor All Size,
Tat Patti Khesi White, Khesi Check,
Towel Khadi 868/968, Duster Cloth,
Dasuti & Amber Khadi

Gramudyog :

Laundry Soap Desi, Tel Ghani Unit

Best Compliments From :

Will Shall Consulting Chandigarh

(Web Development & online Marketing)

Email: contact@willshall.com

Web: www.willshall.com

Best Compliments From :

Suruchi Trikha

Trikha family, Kuwait

Best Compliments From :

Goswami Ganesh Dutta S.D. College Sector 32, Chandigarh

OUR VISION

To achive excellence by reaching the heights of being counted as one of the best institutes in India. To make earnest endeavour to provide high quality education in Commerce, Science, Humanities, Information Technology and Vocational streams. To encourage research activities with highest devotion and complete dedication.

OUR MISSION

To make our students socially useful, compassionate and tolerant citizens, full of national and secular fervour with regard for moral values who are interested in the upliftment of all sections of society and are capable of getting national and international recognition in all fields.

OUR AIM

To provide education that becomes an efficient tool in contributing towards social development and economic growth.

Best Compliments From :

GGDSD COLLEGE SOCIETY

Our Colleges

- G.G.D.S.D. College - Chandigarh
- Pt. Mohan Lal S.D. Public School - Chandigarh
- Pt. Mohan Lal S.D. College for Women - Gurdaspur
- Pt. Mohan Lal S.D. College for Girls -Fatehgarh
- Mrs.Kaushailya Devi Verma Institute
- G.G.D.S.D. College - Kheri Gurna

Best Compliments From :

CA Pritish Goyal
Partner

PAVAN K. GUPTA & CO.

Chartered Accountants

B.O.: #3181, Sector 37-D, Chandigarh - 160040
B.O.: Above ICICI Bank, Sai Road, Baddi, Himachal Pradesh
H.O.: H.No. 100, Lane No. 2, New Green Model Town, Jalandhar - (Pb.)
Mobile : +91 98764 23779, 92168 11999 Ph: 0172-5009779, 0161-2400560
e-mail : pkgchd@gmail.com, pritishgoyal@gmail.com

Best Compliments From :

SHRI RAM KHADI GRAMODYOG
BHUNA DISTT. FBD. - 125 111
(Haryana)

HDFC BANK
for all your
Banking Needs

Saving Account

Fixed Deposits

For more details visit nearest HDFC Bank branch today

*Terms & conditions apply. Credit at the sole discretion of HDFC Bank Ltd.

All LOANS/ ENG/JUNE2015/EXP-MAY2016

HDFC BANK

We understand your world

Best Compliments From :

कामये दुःखतप्तानाम्।
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्॥

स्वदेशी ग्रामोद्योग

(खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग से प्रमाणित)

कार्यालय – 457–बी, सैक्टर 61, चंडीगढ़

महिलाओं को स्वरोजगार देने हेतु अग्रसर संस्थान

उत्तम क्वालिटी के अंकुरित गेहूं से तैयार स्वदेशी दलिया एवं सेवियां

Best Compliments From :

Sporting Syndicate

Kapurthala Road
Jalandhar City

Best Compliments From :

महेश दत्त शर्मा
अध्यक्ष

गांधी स्मारक निधि, पंजाब, हरियाणा
व
हि. प्र., पट्टीकल्याणा द्वारा संचालित
गांधी स्मारक भवन

सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़

Phone : 0172-2770976, 9478522333
Email : chd@gandhismaraknidhi.org
Website : www.gandhismaraknidhi.org
Facebook : Gandhi Smarak Bhawan

पुस्तकालय, वाचनालय एवं बाल पुस्तकालय,
सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र
सभा सम्मेलन/शिविर

साहित्य एवं ग्रामोद्योग बिक्री केन्द्र,
प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगा का डिप्लोमा

Best Compliments From :

INSPACE

PLOT NO. 731, INDUSTRIAL AREA PHASE II
CHANDIGARH PHONE : +91-172-4660731

Design and Build Consultancy

&

Turnkey Projects

Architecture & Interiors

Office : S.C.O. 156-160, Sector 8-C, Chandigarh - 160018

Best Compliments From :

TIN No. 03311137450
REGISTRATION No. 932
CERTIFICATE No. 4118
S.T. 60384113

Certified by Khadi & V.I. Commission
(Govt. of India)

STD : 160
Office : 2280524
K.Store : 2280221
Khadi Bhawan, Chd.
Phone : 0172-2707547
Tele : CHARKHASANGH

KHADI GRAMODYOG
खादी ग्रामोद्योग
K.P.K.M.

Kshetariya Punjab Khadi Mandal

S.C.F. 8, SECTOR 22-D, CHANDIGARH - 160 022
H.O. KHARAR, Distt. S.A.S. Nagar, Mohali

Chairman : Sh. Ram Nath
Secretary : Sh. Dharam Vir

सैक्टर 22, चंडीगढ़ के खादी भण्डार में संस्था के अध्यक्ष श्री रामनाथ जी, भूतपूर्व अध्यक्ष खादी कमीशन, भूतपूर्व उत्तरी क्षेत्र मेम्बर, डिप्टी सी.ओ. सरदार कर्नैल सिंह जी को खादी की वस्तुऐं दिखाते हुए।

संस्था के मुख्य केन्द्र : चण्डीगढ़, खरड़, रोपड़, नंगल, आनन्दपुर साहिब, मोरिन्डा, नूरपुर बेदी, मलोया एवं सुहाना

खादी उत्पाद : कुर्ते, पाजामा, जाकेट, रंगीन खादी, दरी, खेस आदि

ग्रामोद्योग : स्टील अल्मारी, पेटी, सरसों तेल कच्ची घाणी, साबुन, वाशिंग पाउडर आदि

Badhti ka naam zindagi...

AXIS BANK

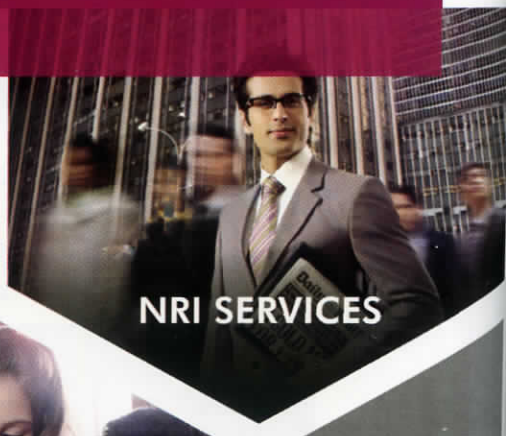

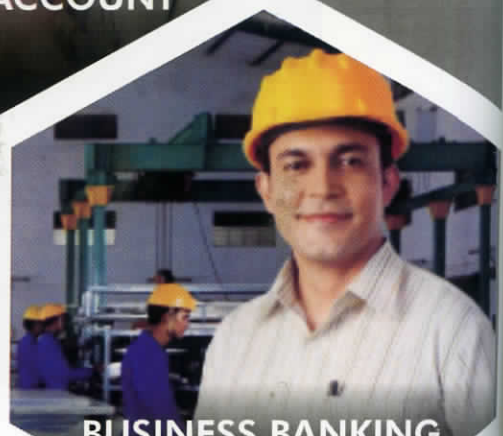

YOUR PARTNER IN PROGRESS

For more information on our products and services, visit:

SECTOR - 26, CHANDIGARH

SCO - 26, SECTOR - 26, CHANDIGARH

Contact No.: 8556016291, 8556016294

Best Compliments From :

PARDHAN CHAMAN LAL FILLING STATION

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम

HP

PARDHAN CHAMAN LAL AUTO MOBILE

HONDA

SUJANPUR (PATHANKOT)

हमारा लक्ष्य
"विकसित भारत"

Our MISSION is to develop human resources; to discover and disseminate knowledge; to extend knowledge and its application beyond the boundaries of SNPL; and to serve and stimulate society by developing in students heightened intellectual, cultural, and human sensitivities as well as professional and technological expertise coupled with a sense of purpose. Inherent in this broad mission are methods of instruction, research, extended education and public service designed to educate people and improve the human condition.

Chairman
Sanjay Bharitya
Smarttalk Netcom (P) Ltd.

Running 450 centers nationwide in the field of Spoken English, BPO Training and Personality Development.

H.O. : SCO 361, Sector 44-D, Chandigarh.
Website : www.smarttalk.in | Tel. : 9216222407, 9779922407

Smarttalk™ PRIDE PASSION PERFORMANCE

Smart English Lab™

SVM® Saraswati Vidyarthi Mandir

khadi
अपनायें
- A Symbol of Freedom
- A Symbol of India's Gift to the World
- A Symbol of India's Culture
MAKE IN INDIA
सफल बनायें
Khadi - The Fabric of Nation
Be a proud supporter of 'Make in India' Campaign
खादी भारत
Khadi India
गायत्री खादी
खेड़ा कॉलोनी, सैक्टर 16 रोड़,
नजदीक जॉटो गेट, करनाल (हरियाणा)
दूरभाष : 0184-2251645

विनोबा जी के कथन

- सर्वोदय है सबका भला
- सद्‌बुद्धि रखो, भगवान को न भूलो।
- एकाग्र और समग्र दोनों मिलकर जीवन है।
- हर आदमी के मुख में नाम और हाथ में काम हो ।
- गाँव की खेती, गाँव का राज
  गाँव-गाँव में हो स्वराज ।
- करूणा, प्रेम, सेवा व भूदान से गरीबी मिटाई जा सकती है।
  जय जगत्, जय जगत् पुकारे जा,
  सबके हित के वासते, अपना सुख बिसारे जा।
- साहित्यिक ईश्वर से ऊँचा ।

ध्यान योग्य चार बातें

- आज का नारा 'जय जगत'
- हमेशा का नारा 'जय जगत'
- हमारा नारा जय 'जय जगत'
- सबका नारा 'जय जगत'

विनोबा जी का मानना

- सबै भूमि गोपाल की, नहीं किसी की मालिकी
- मालकियत छोड़ने से भगवान खुश होगा।
- मालकियत छोड़ने से मानवता खुश होगी।

विद्यार्थियों के लिए चार बातें

- अपने आप पर काबू पाओ।
- अपने दिमाग को स्वतन्त्र रखो।
- हमेशा सेवा करते रहो।
- सदा सावधान रहो।

आचार्यकुल चण्डीगढ़ (रजि.)

गांधी स्मारक भवन, सैक्टर 16–ए, चंडीगढ़–160 015 दूरभाषः 0172–2727226